अंधकार से ज्योति में

(द्वितीय संस्करण)

1998

लेखक

सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली 110049

FROM DARKNESS INTO LIGHT

***by* Sunny David**

Second Printing 1997

2000 Copies

मुद्रक:
प्रिंट इण्डिया
मायापुरी, नई दिल्ली

विषय सूची

पृष्ठ

1. उद्धार का सुसमाचार
2. मृत्यु से जीवन में
3. अंधकार से ज्योति में
4. क्या भले काम हमारा उद्धार कर सकते हैं?
5. यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने और
   उनका उद्धार करने आया था
6. मार्ग, सच्चाई और जीवन यीशु ही है
7. परमेश्वर सब लोगों को मन फिराने
   की आज्ञा देता हैं
8. सब को मन फिराने की आवश्यकता क्यों है?
9. पाप क्या है?
10. पाप का विशाल दाम
11. यीशु बचाता है
12. यीशु कब बचाता है?

सत्य सुसमाचार

रेडियो पर इस मसीही कार्यक्रम को आप प्रत्येक बृहस्पतिवार के दिन रात में नौ बजे और प्रत्येक रविवार को रात 8:45 पर श्रीलंका से 19, 25 और 41 मीटर बैंड पर सुन सकते हैं।

उद्धार का सुसमाचार

इस कार्यक्रम को हम सत्य-सुसमाचार इसलिये कहते हैं, क्योंकि इस में हम आप का ध्यान उस सुसमाचार यानि उस खुशी की खबर की तरफ दिलाते हैं जिसे आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व परमेश्वर ने सारे जगत को दिया था। उस के वचन की पवित्र पुस्तक हमें बताती है, कि उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर हमें बचाने के लिये पृथ्वी पर आ गया था। यह सचमुच में खुशी की खबर है, कि परमेश्वर के पुत्र ने स्वर्ग को छोड़ दिया और हमें बचाने के लिये वह ज़मीन पर आ गया। लेकिन परमेश्वर का पुत्र कौन था? परमेश्वर हमारी तरह एक इनसान नहीं है—और यद्यपि उसने आरम्भ में इन्सान को अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर बनाया था—तौभी वह कोई मनुष्य नहीं है। पवित्र बाइबल कहती है, कि परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना 4:24)। और वह जो उसका पुत्र बनकर जगत में आया था वह वास्तव में उसका सामर्थी वचन था, जिसके द्वारा उसने सारी सृष्टि को रचा था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर का वह "वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर उसने हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसे पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना 1 : 14)।

सो परमेश्वर के वचन ने मनुष्य की देह को अपने ऊपर धारण कर लिया था और वह एक मनुष्य के रूप में होकर संसार में आ गया था। वह अनुग्रह यानि दया और सच्चाई से परिपूर्ण था, और लोगों ने उसके सामर्थपूर्ण कामों के द्वारा उसकी महिमा को देखा था, और यह स्वीकार किया था कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है। लेकिन परमेश्वर का पुत्र मनुष्य के रूप में होकर संसार में क्यों आया था? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि वह एक बड़े ही महान् उद्देश्य को लेकर पृथ्वी पर आया था। यद्यपि इस पृथ्वी पर

वह लगभग तेंतिस साल तक विद्यमान रहा था; लेकिन वह इस ज़मीन पर रहने के लिये नहीं आया था। और हांलाकि उस ने ज़मीन पर लोगों के बीच में बड़े-बड़े सामर्थ के काम किए थे; लेकिन वह इस उद्देश्य से भी ज़मीन पर नहीं आया था। फिर हम यह भी बाइबल में पढ़ते हैं, उसके बारे में, कि उसने लोगों को बड़ी-बड़ी भयानक बीमारियों से चंगा किया था; लेकिन वह पृथ्वी पर इस उद्देश्य को लेकर भी नहीं आया था। तो फिर वह क्यों आया था?

उसने कहा था, कि मैं जगत में खोए हुए लोगों को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने को आया हूं। (लूका 19 : 10)। उसने कहा था, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परन्तु जब वह मर जाता है तो वह बहुत फल लाता है। (यूहन्ना 12 : 24)। परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह इस जगत में मरने के लिये आया था! यूं तो इस दुनिया में जितने भी लोग आए हैं सब ने मौत का सामना किया है, और जितने भी आज ज़िन्दा हैं सभी को मृत्यु का सामना करना पड़ेगा। लेकिन यीशु की ज़िन्दगी का मकसद ही मौत था। वह संसार में आया ही इसी उद्देश्य से था। उसकी मौत में न जाने कितनी ज़िन्दगियां कैद थीं। उसकी मौत एक गेहूं के दाने की मौत के समान थी। आप एक गेहूं के दाने को लेकर ज़मीन में गाड़ दीजिए। कुछ ही दिनों में उस से सैंकड़ों अन्य दाने जन्म लेकर वजूद में आ जाएंगे। फिर आप उन सैंकड़ों दानों को लेकर ज़मीन में गाड़ दीजिए, और कुछ ही समय में उन सैंकड़ों दानों से हज़ारों और दाने पैदा हो जाएंगे। फिर आप उन हज़ारों गेहूं के दानों को लेकर भूमि में गाड़ दीजिए, और उनसे लाखों और दाने पैदा हो जाएंगे। और फिर, आप उन लाखों गेहूं के दानों को लेकर ज़मीन में गाड़ दीजिए और कुछ ही समय बाद वे अपने ही समान करोड़ों अन्य गेहूं के दानों को पैदा कर देंगे। ठीक ऐसी ही थी यीशु की मौत! वह अपनी मौत से अपने ही समान

लोगों को जन्म देना चाहता था। इसीलिये उसने कहा था, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, लेकिन जब वह मर जाता है तो वह बहुत फल लाता है।

परमेश्वर की दृष्टि में यीशु की मृत्यु का एक बहुत बड़ा महत्व था। वह उस की मृत्यु के द्वारा पृथ्वी पर उसी के समान अनेकों अन्य लोगों को जन्म देना चाहता था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3 : 16)। और बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम की भलाई को जगत पर इस तरह से प्रकट किया है कि जब हम सब पापी ही थे तो उसका पुत्र मसीह हमारे लिये मर गया। (रोमियों 5 : 8)। यही कारण है, कि यीशु की मौत को बाइबल में एक सुसमाचार यानि एक खुशी का समाचार कहा गया है। उसकी मौत में हमें यह खुशी का पैग़ाम मिलता है कि हमारे पापों का कर्ज़ चुकाया जा चुका है। बाइबल में लिखा हैं, कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, किन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में, अनन्त जीवन है। यानि हम सब अपने-अपने पापों के कारण नरक में हमेशा का दण्ड पाने के योग्य थे। लेकिन परमेश्वर ने हम सब पर अपनी ऐसी दया दिखाई कि अपने ही पुत्र की मृत्यु के द्वारा उसने हम सब के पापों का प्रायश्चित कर दिया और हमें यह अवसर दे दिया कि हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा धर्मी ठहरकर, नरक से बचकर, स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाएं। यह सुसमाचार है! यह एक खुशी का संदेश है! परमेश्वर की पवित्र बाइबल हमें यह खुशी का संदेश देती है, की उसने हम से ऐसा प्रेम किया और हम सब के ऊपर ऐसा बड़ा अनुग्रह किया, कि उसने अपने एकलौते पुत्र को, जो निष्पाप और निष्कलंक था, हमारे स्थान पर एक पापी मान लिया। और उसे एक क्रूस के ऊपर चढ़वाकर हमारे पापों के लिये मृत्यु दण्ड दे दिया ताकि हम सब के

पापों का प्रायश्चित हो जाए और हम उस में होकर परमेश्वर के समीप धर्मी बन जाए! (2 कुरिन्थियों 5 : 21)।

क्या आप परमेश्वर के इस सत्य सुसमाचार पर विश्वास करते हैं? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। (1 कुरिन्थियों 1 : 18)। क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? मैं उस "परमेश्वर" की बात नहीं कर रहा हूं जिसे आप ने अपने घर में किसी कोने में रखा हुआ है। मैं उस "परमेश्वर" की बात भी नहीं कर रहा हूं जिसे लोगों ने अपने मंदिरों में और गिरजाघरों में कैद कर के रखा हुआ है। पर मैं उस सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर के बारे में कह रहा हूं जिसने सारे जगत को, और जगत की प्रत्येक वस्तु को, और आप को और मुझे अपनी सामर्थ से बनाया है। क्या आप उस परमेश्वर में विश्वास करते हैं? क्या आप उसकी सामर्थ में विश्वास करते हैं? क्या आप का यह विश्वास है, कि वह परमेश्वर एक मरे हुए गेहूं के दाने से करोड़ों अन्य गेहूं के दानों को पैदा कर सकता है? अगर आप का उस परमेश्वर में ऐसा विश्वास है, तो आप को यह विश्वास करने में भी कोई कठिनाई नहीं होगी, कि उस ने अपने सामर्थी वचन को इन्सान बनाकर जगत में भेज दिया। और उसे सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराकर क्रूस के ऊपर मृत्यु के द्वारा बलिदान कर दिया, ताकि हम सब उस की मौत के ज़रिए पाप से छुटकारा पाकर उसके समान धर्मी बन जाएं।

क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? क्या आप उसकी सामर्थ में विश्वास करते हैं? क्या आप उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं? क्या आप यह विश्वास करते हैं, कि यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा आप के सारे पापों का प्रायश्चित कर दिया है? अगर आप का ऐसा विश्वास है, तो अपने मन में यह निश्चय कीजिए कि अब से आगे को आप कोई पाप नहीं करेंगे और अपना

जीवन अब से यीशु की आज्ञाओं पर चलकर व्यतीत करेंगे।

प्रभु यीशु ने कहा था, कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस 16 : 16)।

हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, और हम सब का केवल एक ही उद्धारकर्त्ता है। हम सब पापी हैं, और हम सब को उद्धार प्राप्त करने की आवश्यकता है। अगर हम इस पृथ्वी पर इस जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लें, और अपने पापों से उद्धार पाए बिना ही इस जगत को छोड़कर चले जाएं तो हमें कोई लाभ नहीं होगा। उद्धार पाना मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह यीशु के बलिदान के द्वारा हमारे लिये उद्धार पाना सम्भव कर दिया है। पर यदि किसी का उद्धार नहीं होगा तो यह उस व्यक्ति का अपना ही दोष होगा। सो, हम सब ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं? (इब्रानियों 2 : 3)।

मृत्यु से जीवन में

बाइबल में लूका नाम की पुस्तक के पन्द्रहवें अध्याय में हमें एक बड़ी ही शिक्षाप्रद कहानी मिलती है। यह कहानी एक पिता और, उसके दो बेटों के बारे में है। इस कहानी से हम यह सीखते हैं, कि मनुष्य अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने के लिये परमेश्वर से दूर हो जाता है। और परमेश्वर से दूर रहकर वह अपना जीवन पाप में व्यतीत करता है। और पाप में रहते हुए वह एक मरी हुई दशा में या एक मरी हुई अवस्था में रहता है। लेकिन जब वह पाप से अपना मन फिरा लेता है, और पाप का रास्ता छोड़कर परमेश्वर के पास वापस आ जाता है तो उसे फिर से एक नया जीवन मिल जाता है। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से दूर है। इन्सान अपनी मनमानी करना चाहता है; वह अपना जीवन अपनी मर्ज़ी से बिताना चाहता है, और इसी कारण से वह परमेश्वर से अलग और उस से दूर है। परमेश्वर खुद किसी को भी अपने से दूर नहीं करता, वह किसी भी इन्सान को अपने से अलग नहीं रखना चाहता। पर हर एक इंसान स्वयं अपने ही पापों के कारण उस से दूर और अलग है। परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है; और चाहे कोई इंसान कितना भी पापी क्यों न हो और उस से कितना भी दूर क्यों न हो, तौभी हमारे स्वर्गिय परमेश्वर पिता को सदा यही इन्तिज़ार रहता है कि कब कोई अपना मन फिराकर उसके पा वापस लौट आए। इस कहानी में, जिसे अब हम बाइबल में से पढ़ने जा रहे हैं, प्रभु यीशु ने परमेश्वर को एक प्रेमी और दयालु पिता के समान प्रस्तुत किया है। और हम सबका ध्यान इस बात के ऊपर दिलाया है, कि पाप मनुष्य को परमेश्वर से कितनी देर ले जाता है और उसे कितना गन्दा और घिनौना बना देता है। अगर आप ने किसी ऐसे जन को देखा है, जो भूख से पीड़ित होकर कूड़े के खत्तों में से फेंकी

हुई चीज़ें उठाकर खाता है। यदि आपने किसी ऐसे मनुष्य को देखा है, जिसके तन पर कपड़ों के नाम पर चीथड़े लटक रहे हैं। और अगर आपने किसी ऐसे आदमी को देखा है जो न केवल भूखा और नंगा ही हो बल्कि उसके पास रहने को एक झोंपड़ी भी न हो। तब आप समझ सकते हैं, कि इस कहानी में यीशु ने पाप में रह रहे इन्सान का ठीक ऐसा ही एक चित्र बनाया है। लेकिन, फिर, यीशु ने पाप में खोए हुए हम इन्सानों को खुशी का यह पैग़ाम भी दिया है, कि अगर हम में से हर एक अपने पापों को छोड़कर परमेश्वर के पास वापस आ जाए, तो परमेश्वर हमारे सब पापों को क्षमा करने को तैयार है।

प्रभु यीशु ने इस कहानी को इस प्रकार कहा था, कि "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे, और उन में से जो छोटा था, उस ने पिता से कहा, 'हे पिता, सम्पत्ति का वह भाग जो मेरे हिस्से में आता है मुझे दे दे' सो उसने अपनी धन-सम्पत्ति उन में बांट दी। पर बहुत दिन न बीते थे कि छोटा सब कुछ एकत्रित करके दूर देश को चल पड़ा जहां उस ने अपनी सम्पत्ति कुकर्म में उड़ा दी। जब वह सब कुछ उड़ा चुका, तो उस देश में भयंकर अकाल पड़ा और वह दरिद्र हो गया। और वह जाकर उस देश के एक नागरिक के यहां काम में लग गया। उसने उसे खेत में सुअर चराने को भेजा। उसे बड़ी उत्कंठा हुई कि वह उन फलियों से जो सुअर खा रहे थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। परन्तु, जब वह होश में आया तो उसने कहा, मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को पेट-भर भोजन मिलता है पर मैं यहां भूखों मर रहा हूं! मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। मैं अब तेरा पुत्र कहलाने के योग्य न रहा; मुझे अपना एक मज़दूर समझकर रख ले! सो, वह उठकर अपने पिता के पास चला आया। परन्तु जब वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखा और उस पर तरस खाया, और

उसने दौड़कर उसे गले लगाया और चूमा। पुत्र ने उस से कहा, 'हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, मैं अब, तेरा पुत्र कहलाने के योग्य न रहा।' परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'अच्छे से अच्छा वस्त्र शीघ्र निकाल लाओ और उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पांव में जूतियां पहनाओ। और एक मोटा बछड़ा लाकर काटो कि हम खाएं और आनन्द मनाएं। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, अब जीवित हो गया है; वह खो गया था, अब मिल गया है'। और वे आनन्द मनाने लगे। पर उसका बड़ा पुत्र उस समय खेत में था। जब वह आकर घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने-बजाने और नाचने का शब्द सुना। सो उसने एक दास को बुलाकर उस से पूछा, कि यह सब क्या हो रहा है? उस ने उस से कहा, कि तेरा भाई आया है, और इसलिये कि तेरे पिता ने उसे भला-चंगा पाया है, मोटा बछड़ा कटवाया है। पर वह क्रोधित हुआ और उस ने भीतर जाना नहीं चाहा। इस पर उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। परन्तु उस ने अपने पिता को उत्तर दिया, 'देख, मैं इतने वर्षों से तेरी सेवा कर रहा हूं और मैंने कभी तेरी एक भी आज्ञा नहीं टाली, परन्तु तू ने मुझे कभी भी एक बकरी का बच्चा तक नहीं दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाऊं। पर जब तेरा यह पुत्र आया है जिस ने तेरी सारी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी, तो तू ने, उसके लिये मोटा बछड़ा कटवाया!' उसने उस से कहा, मेरे पुत्र, तू सदा मेरे साथ रहा है और जो कुछ मेरा है वह सब कुछ तेरा है। परन्तु हमें अब आनन्द मनाना और मगन होना चाहिए, क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, अब जीवित हो गया है, और खो गया था अब मिल गया है।''

यहां इस बात पर ग़ौर करें, कि उस बाप ने अपने बेटे के बारे में यूं कहा, कि मेरा यह बेटा खो गया था पर अब मिल गया है, यह मर गया था पर अब फिर से जी गया है। वह खो गया था। वह मर

गया था। लेकिन कैसे? क्योंकि वह अपने पिता से दूर चला गया था, क्योंकि उसके पिता से उसका सम्बन्ध टूट गया था। लेकिन अब वह अपने पिता के पास फिर से वापस आ गया था, और उसने सारी नम्रता और दीनता से स्वीकार किया था कि "मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।" इसलिये अब वह फिर से पिता को मिल गया था, और फिर से उसका सम्बन्ध अपने पिता के साथ स्थापित हो गया था।

प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना 5 : 24)। यहां प्रभु यीशु ने आत्मिक मृत्यु और आत्मिक जीवन को सम्बोधित किया है। ज़मीन पर हर एक इन्सान उस लड़के की तरह पाप में खोया हुआ है, परमेश्वर से दूर है और अपने पापों में मरा हुआ है; उसमें आत्मिक जीवन नहीं है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर के लेखे में सब ने पाप किया है और इसलिये सब के सब उस से अलग हैं। परन्तु पृथ्वी पर प्रभु यीशु को भेजकर परमेश्वर ने मानवता के प्रति अपने प्रेम और अनुग्रह को प्रकट किया है। वह चाहता है, कि हम उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाकर और उसकी बात मानकर फिर से उसके पास वापस आ जाएं, और फिर से उस आत्मिक जीवन को प्राप्त कर लें जो वह हमें देने को तैयार है। अपने अनुग्रह से उसने हम सब के पापों का प्रायश्चित किया है। उस ने हम सब से इतना प्रेम रखा कि जब हम सब उस के विरोध में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे और जब हम सब पापी ही थे तो उसने अपने पुत्र को हम सब के पापों के बदले में और हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस पर बलिदान कर दिया था। क्रूस पर यीशु ने परमेश्वर के अनुग्रह से जगत के पापों को अपने ऊपर उठाया था। क्रूस पर यीशु ने सारे जगत के पापों का दण्ड अपने

ऊपर ले लिया था। इसीलिये बाइबल कहती है, कि मसीह यीशु के द्वारा हम मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश करते हैं।

पर क्या आप ने यीशु मसीह में विश्वास किया है? क्या आपने पाप से अपना मन फिराकर यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लिया है? पवित्र बाइबल कहती है, कि, "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों 17 : 30, 31)।

हर एक इन्सान पाप के कारण परमेश्वर से अलग है और इस कारण मृत्यु की दशा में है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी खोई हुई हालत को अनुभव करके होश में आए और पाप से अपना मन फेरकर परमेश्वर के ठहराए मार्ग—प्रभु यीशु मसीह—के द्वारा उसके पास वापस आ जाए। क्योंकि जीवन अनिश्चित है, परन्तु न्याय और अनन्तकाल निश्चित हैं। (2 कुरिन्थियों 5 : 10; सभोपदेशक 12 : 13-14)।

अंधकार से ज्योति में

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें एक बार फिर से यह सुन्दर अवसर दिया है। हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि उसी ने हमें जीवन दिया है। और जो कुछ भी हमारे पास है वह सब कुछ हमें उसी के अनुग्रह से मिला है। उस ने हमें रात और दिन और भांति-भांति के मौसम और भोजन-वस्तुएं और अनेक अन्य वस्तुएं भी दी हैं। और सबसे बड़ी बात हम यह देखते हैं कि उसने इन्सान को एक बड़ा ही अद्‌भुत प्राणी बनाया है। न केवल उसने मनुष्य को अपनी समानता पर बनाकर उसे आत्मिक जीवन ही दिया है। पर मनुष्य की देह संसार में सबसे बड़ी अद्‌भुत वस्तु है! पृथ्वी पर कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी तुलना मनुष्य की देह से की जा सकती है। परमेश्वर की पवित्र पुस्तक बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा अद्‌भुत इसलिये बनाया है ताकि मनुष्य अपने कामों से अपने सृष्टिकर्त्ता की महिमा और बड़ाई करे। (मत्ती 5 : 16)। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने शरीर के प्रत्येक अंग से और हर एक काम से उसकी महिमा करें। मनुष्य की देह में एक बड़ा ही महत्वपूर्ण अंग है उसकी आंख। प्रभु यीशु ने मनुष्य के शरीर के इस विशेष अंग को सम्बोधित करके एक बार यूं कहा था, कि, "शरीर का दिया आंख है : इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अंधियार होगा; इस कारण जो तुझ में है, यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कैसा बड़ा होगा!" (मत्ती 6 : 22, 23)।

यहां यीशु ने हमारा ध्यान इंसान की आंख पर दिलाकर कहा है, कि अगर मनुष्य की आंख निर्मल होगी, यानि वह बुराई को देखकर भी उसकी ओर आकृषित नहीं होगी और कोई बुरी लालसा नहीं करेगी तो वह मनुष्य के सारे शरीर को प्रकाशमान

रखेगी। लेकिन अगर इंसान की आंख बुरी हो, यानि बुराई को देखने के लिये ललायित हो, बुराई को देखकर उसकी तरफ झुकें, और शारीरिक अभिलाषाओं को भड़काए, तो ऐसी आंख मनुष्य के सारे शरीर को अंधकारमय बना देगी। और कितना वास्तविक है यह कथन! मनुष्य की आंख उसके शरीर के सारे अंगों को अंधकार बना देती है। वह किसी चीज़ को देखता है और फिर उसे हासिल करने के लिये कुछ करता है। शरीर की अभिलाषाओं और जीवन के अहंकार को मनुष्य के भीतर आंखों की अभिलाषा ही जाग्रत करती है। बाइबल में अंधकार की तुलना पाप से की गई है। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा था, कि, "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति ज़गत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के कम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।" (यूहन्ना 3 : 17—20)।

जब सारी मानवता पाप के अंधकार में डूबी हुई थी तो यीशु जगत की ज्योति बनकर संसार में आया था। वह ज्योति दिखाने नहीं आया था, परन्तु वह स्वयं ज्योति था। वह रास्ता दिखाने नहीं आया था, क्योंकि वह खुद रास्ता था। बहुतेरे लोगों की यीशु मसीह के बारे में आज ऐसी धारणा है, कि वह एक गुरु था जो पृथ्वी पर लोगों को मार्ग दिखाने के लिये आया था। परन्तु यह विचार ग़लत है। यीशु मार्ग दिखाने नहीं आया था परन्तु वह स्वयं मार्ग था। उस के ये शब्द आज भी परमेश्वर की बाइबल में हम

पढ़ते हें, कि "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14 : 6)। उस ने कहा था, कि, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा,. परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा" (यूहन्ना 8 : 12)। ज्योति किसे अच्छी नहीं लगती? प्रकाश किसे अच्छा नहीं लगता? उन्हें जो अंधेरे को रोशनी से ज़्यादा प्यार करते हैं। चोर अकसर रात को ही चोरी क्यों करते हैं? ताकि उन्हें कोई देखे न। वे जानते हैं, कि वे एक गलत और बुरा काम कर रहे हैं, इसलिये वे नहीं चाहते कि उन्हें कोई देखे, और इस कारण से वे अपना काम रात में करते हैं। क्योंकि अन्धकार उनके कामों को छिपा देता है, और उनके बुरे कामों पर परदा डाल देता है। कुछ बच्चे अपने घरवालों से छिपकर गलत काम करते हैं; शायद वे सिगरेट पीते हैं, या कोई नशा करते हैं, या गन्दा साहित्य पढ़ते हैं, या कोई और बुरा काम करते हैं। वे उन कामों को छिपकर क्यों करते हैं? क्योंकि वे जानते हैं कि वे गलत काम कर रहे हैं। प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "जो बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उस के कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" (यूहन्ना 3: 20,21)। यही कारण है कि आज, बहुत से लोग यीशु के पास नहीं आते हैं, उसे स्वीकार नहीं करते हैं, उस पर विश्वास नहीं करते हैं, और उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं। क्योंकि वे जानते हैं; कि यीशु के पास आने का अर्थ है ज्योति के पास आना, और ज्योति उनके सब कामों को प्रकट कर देगी। वे अपने गलत कामों को छोड़ना नहीं चाहते, वे अपनी बुरी आदतों को छोड़ना नहीं चाहते। सो वे यीशु, अर्थात् ज्योति के पास नहीं आते।

कुछ ही समय हुआ जबकि मैं एक जन को प्रभु यीशु के बारे

में बता रहा था। मैंने उन्हें बताया, कि यीशु किस तरह से हमारी ज़िन्दगी को बदल देता है। अगर हम पूरे निश्चय और विश्वास के साथ उसके पास आएं, और उसका कहना मानकर अपने सब बुरे कामों से मन फिरा लें, और अपने जीवन के सब बुरे कामों की क्षमा पाने के लिये यीशु का बपतिस्मा ले लें और फिर उसके कहने के अनुसार चलें, तो हमारा सारा जीवन बदल जाएगा। लेकिन वह ऐसा करने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह अपने उन बुरे कामों को नहीं छोड़ना चाहता था जो अब उसकी आदत और उसके जीवन का एक हिस्सा बन चुके थे। और तभी मुझे यह याद आया कि किस प्रकार यीशु ने एक जगह कहा था, "कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।" (यूहन्ना 8 : 34)। जो लोग अंधकार से प्रेम रखते हैं वे ज्योति में नहीं आना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं, कि ज्योति का प्रकाश उन के कामों को प्रकट कर देगा। पवित्र बाइबल कहती है, कि, "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतों, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति?" (2 कुरिन्थियों 6 : 14)। अगर आप ज्योति में हैं तो आप अंधकार में नहीं हैं, पर अगर आप अंधकार में हैं तो आप ज्योति में नहीं हैं। क्योंकि हम दोनों जगह एक साथ नहीं रह सकते। बाइबल में लिखा है, "कि परमेश्वर ज्योति है : और उस में कुछ भी अंधकार नहीं। पर यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम झूठे हैं : और सत्य पर नहीं चलते। पर जैसा वह ज्योति में है यदि वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।" (1 यूहन्ना 1 : 5—7)।

क्या आप ज्योति में हैं? यीशु कहता है, कि, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना 8 : 12)। प्रेरित पौलुस, प्रभु

यीशु के अनुयायियों को लिखकर बाइबल में एक जगह यूं कहता है, कि "इसलिये प्रिय बालकों के सदृश परमेश्वर का अनुकरण करनेवाले बनो, और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी हम से प्रेम किया और सुखदायक सुगन्धित भेंट बनकर हमारे लिये अपने आप को परमेश्वर के सम्मुख बलिदान कर दिया। जैसा पवित्र लोगों के लिये उचित है, तुम्हारे मध्य न तो व्यभिचार, न किसी प्रकार के अशुद्ध काम, न लोभ का नाम तक लिया जाए ,और न तो घृणित कार्य, न मूर्खतापूर्ण बातें, न ठट्ठे की बातें जो शोभा नहीं देती पाई जाएं, वरन् धन्यवाद ही दिया जाए। क्योंकि तुम यह निश्चयपूर्वक जानते हो कि कोई व्यभिचारी, अशुद्ध जन, या लोभी मनुष्य अर्थात् मूर्तीपूजक मसीह और परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन्हीं के कारण आज्ञा न माननेवालों पर परमेश्वर कर प्रकोप पड़ता है। इसलिये तुम ऐसे लोगों के सहभागी न बनो।" क्योंकि, "पहिले तो तुम अंधकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो" (इफिसियों 5 : 1—8)।

क्या आप अंधकार में हैं? क्या आप ज्योति में आना चाहते हैं? यीशु, परमेश्वर का पुत्र, जगत की ज्योति है। उसमें विश्वास लाएं और उसकी आज्ञा मानें। उसमें होकर आप अंधकार से ज्योति बन जाएंगे।

क्या भले काम हमारा उद्धार कर सकते हैं?

आज हम इस विषय में देखेंगे, कि क्या हम भले काम करके अपने पापों से उद्धार पा सकते हैं? भले काम करना बड़ी ही अच्छी बात है। बाइबल हमें सिखाती है, कि हम भलाई के अच्छे कामों को करने में लगे रहें, और जहां तक हो सके हम सबके साथ भलाई करें। (गलतियों 6:10)। लेकिन क्या हम अपने भले कामों के बल पर स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं? भले कामों से हमारा अभिप्राय अच्छे कामों से है। यानि ऐसे काम जिन्हें इन्सान अच्छा समझता है; जिन कामों को मनुष्य धर्म के काम कहता है। किन्तु क्या अपने अच्छे और धर्म के काम करके वह अपने पापों से मुक्ति पा सकता है? लाखों लोग धार्मिक स्थानों में जाकर दान चढ़ाते हैं। रुपए-पैसे और सोने-चांदी से लेकर, फूल-फल और जानवरों के बलिदान तक देते हैं। और ये सब कुछ वे इसलिये करते हैं ताकि ईश्वर उनके पापों को क्षमा कर दे। कुछ लोग नदियों में जाकर स्नान करते हैं। कुछ लोग भिखारियों और फ़कीरों को खाना खिलाते हैं। ये सब काम लोग क्यों करते हैं? इन सब "धर्म" के कामों को करके लोग अपने उद्धार को कमाना चाहते हैं। वे अपने धर्म के कामों से ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। बे-जान और गूंगी वस्तुओं के सामने झुककर वे उन्हें सम्मानित करते हैं, और सोचते हैं कि वे निर्जीव वस्तुएं उन्हें पाप से छुटकारा दिलवा देंगी। मैंने लोगों को कब्रों को पूजते देखा है, वे कब्रों और मज़ारों पर जाकर मोमबत्तियां और अगरबत्तियां जलाते हैं। मालाओं को हाथ में लेकर उनके मोतियों को गिनते रहते हैं। इन्सान सोचता है, कि ये सब धर्म के अच्छे काम हैं और इन्हें करने से उसे मुक्ति मिल जाएगी।

आज से लगभग दो हज़ार साल पहिले प्रेरित पौलुस ने बाइबल में लिखकर कहा था कि, "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो

सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये, कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रकट है; क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, और यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। और वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।" (रोमियों 1 : 18—23)। यह बात पॉलुस ने लोगों के बारे में आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले लिखी थी। लेकिन आज, बीसवीं सदी के इस आधुनिक युग में; तालीम और इल्म के इस ज़माने में; उन्नति और तरक्की के इस दौर में भी आज हम देखते हैं कि धार्मिक दृष्टिकोण से इन्सान अन्धेरे में ही चल रहा है। सदियों पुराने धार्मिक रीति-रिवाज़ों को यूं ही मानता चला जा रहा है।

अभी जो हम ने बाइबल में से पढ़ा था उसमें लेखक हमारा ध्यान इसी बात के ऊपर दिला रहा है, कि जिसने इन्सान और सारी कायनात को बनाया है। वह, जिस ने सब को जीवन, बल और शक्ति दी है। वह जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीज़ों को रचा है। क्या उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की तुलना पृथ्वी या आकाश की किसी भी चीज़ से कीं जा सकती है? क्या लोग कोई इतना बड़ा, विशाल और कीमती धार्मिक स्थान बना सकते हैं जिसमें उस सर्वशक्तिमान को लोग कैद करके रख लें? या क्या मनुष्य उसके सामने नाचकर और ढोल और बाजे बजाकर उसे प्रसन्न कर सकता है? क्या उसे रुपये-पैसे और सोने चांदी की ज़रुरत है? क्या वह कोई इन्सान है जिसे फल-फूल और मेवों का

प्रयोजन है? मोम बत्तियों की उसे क्या आवश्यकता है? क्या वह धूप-बत्ती, लोबान और अगर बत्तियों की खुशबु सूंघता है? आज सच्चाई यह है, कि पृथ्वी पर अधिकतर लोगों की परमेश्वर के बारे में धारणा ही गलत है। लोग सच्चे परमेश्वर के अस्तित्व से अनजान हैं। इसीलिये आज लोग उसकी तुलना ज़मीन की और आकाश की चीज़ों के साथ कर रहे हैं। कोई उसे पशु-पक्षी और ज़मीन पर रेंगनेवाले जन्तुओं की समानता में पूजता है। तो कोई उसे आकाश में चमकनेवाली वस्तुओं के द्वारा पूजता है। सड़कों पर और बाज़ारों में उसकी तस्वीरें बनाकर बेची जाती हैं। जिस मिट्टी को इन्सान अपने पैरों से रोंदता है उसी मिट्टी से उस सर्वशक्तिमान की अकृतियां, मूर्तियां और शक्लें बनाई जातीं हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है की परमेश्वर की काल्पनिक तस्वीरें और मूर्तियां बनानेवाले लोग बड़ा ही अच्छा धन्धा कर रहे हैं। लेकिन करोड़ों लोग उनके सामने झुक-झुककर सच्चे और जीवते और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का निरादर कर रहे हैं। लोग परमेश्वर के सच्चे अस्तित्व से अपरीचित हैं। और यही कारण है कि वे उस से अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये, और उसे प्रसन्न करने के लिये और उसके स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिये ऐसे-ऐसे काम कर रहे हैं जिन के द्वारा वे सोचते हैं कि वे परमेश्वर को खुश कर देंगे और वह उनके सब पाप क्षमा कर देगा और उन्हें अपने स्वर्ग में स्थान दे देगा। करोड़ों और अनगिनत लोग अपनी ऐसी ही काल्पनिक धारणाओं के साथ उस अनन्तकाल में हमेशा के लिये प्रवेश कर चुके हैं जहां से कभी कोई वापस नहीं आएगा। हमारी ही तरह उनके पास भी एक अवसर था, कि वे सच्चे परमेश्वर को जानते, और उसकी इच्छा को जानते, और उसकी मर्ज़ी पर चलते। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत उन्होंने अपने पुरखाओं के रीति-रिवाज़ों को मानकर वैसे ही काम किए जो परमेश्वर की दृष्टि में घृणित हैं।

जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था तो यीशु ने लोगों से कहा था, कि तुम सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी। (यूहन्ना 8 : 32)। यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर लोगों को सच्चाई बताने आया था। उसके द्वारा परमेश्वर ने संसार पर अपने आप को प्रकट किया था। इसीलिये बाइबल में यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। यीशु ने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं और बिना मेरे द्वारा परमेश्वर के पास कोई नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14 : 6)। यीशु ने कहा था, कि परमेश्वर आत्मा है और उसकी भक्ति करनेवालों को चाहिए कि वे आत्मा और सच्चाई से उसकी भक्ति करें। (यूहन्ना 4 : 24)। अपने प्रेरितों के द्वारा यीशु ने सिखाया था, कि जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर मनुष्यों के हाथों से बनाए हुए घरों में नहीं रहता है, और न ही उसे पृथ्वी पर की किसी भी चीज़ की ज़रूरत है, क्योंकि उस ने खुद ही सब चीज़ों को बनाया है। (प्रेरितों 17 : 24,25)।

पवित्र बाइबल कहती है, कि अनुग्रह से मनुष्य का उद्धार होता है, "और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया है।" (इफिसियों 2 : 8—10)। सो बाइबल हमें यह सिखाती है, कि पाप से हमारा उद्धार हमारे अपने कामों के द्वारा नहीं हो सकता। बल्कि उद्धार परमेश्वर का वरदान है जो हमें उसके अनुग्रह से मिलता है। परमेश्वर का अनुग्रह सारी मानव जाति पर यीशु मसीह के द्वारा प्रकट हुआ था, जो परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर लटकाकर मारा गया था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम को जगत पर इस प्रकार प्रकट किया था कि जब हम सब पापी ही थे तो मसीह यीशु हमारे लिये मर गया था।

यीशु पापियों के लिये अपनी मृत्यु के कारण हम सब के पापों का प्रायश्चित है। जब कोई मनुष्य उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानता है तो परमेश्वर उस व्यक्ति के सारे पापों को क्षमा कर देता है। बाइबल कहती है कि परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों पर प्रकट है। (तीतुस 2:11)। उस का अनुग्रह आप पर भी प्रकट है। परमेश्वर का मार्ग प्रभु यीशु मसीह है। अगर आप उसमें विश्वास लाएंगे और उसकी आज्ञानुसार चलेंगे, तो वह आप को इस जीवन में सारे अंधकार से बचाएगा, और फिर स्वर्ग में हमेशा की ज़िंदगी देगा।

क्या आप आज़ अपने आपको उसे देने को तैयार हैं? वह इस संसार की ज्योति है। उसके पास आकर उस से हम सीखते हैं कि सच्चा परमेश्वर कौन है, और वह हम सब से क्या चाहता है। वह न केवल पाप से हमारा उद्धार ही करता है, परन्तु हमें यह भी सिखाता है, कि किस प्रकार हम अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत करके अपने आपको उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना सकते हैं।

यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया था

मुझे बड़ी ही ख़ुशी है यह देख़कर कि इस वक्त मेरे पास यह अवसर है, कि मैं आप सब का ध्यान परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल पर दिलाऊंगा। बाइबल हमें उस परमेश्वर के बारे में बताती है जो सच्चा और ज़िन्दा है, और जिसने सारे जगत को और हम सब को बनाया है। बाइबल हमें मनुष्य के बारे में बताती है, कि वह इस पृथ्वी पर कहां से आया है उसका आरम्भ कैसे हुआ था। बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य पाप में है, और उसे पाप से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। फिर बाइबल हमें परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में बताती है, कि वह किस प्रकार पृथ्वी पर आया था और उसने पृथ्वी पर आकर सारे जगत के लिये कौन सा बड़ा काम किया था। सो हम देखते हैं, कि इस समय हम कुछ बड़ी ही आवश्यक बातों को देखने जा रहे हैं। हम परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह, और मनुष्य की एक बहुत बड़ी आवश्यकता के बारे में देखने जा रहे हैं। प्रभु यीशु ने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रह सकता। (मत्ती 4:4)। और यह कथन बिलकुल सच है। मनुष्य के भीतर एक ऐसी आंतरिक भूख है, जिसे रोटी और पानी से नहीं मिटाया जा सकता। उसे इस बात का एहसास है, कि पृथ्वी उसके जीवन का अंत नहीं है, वह जानता है कि उसे इस जगत से कहीं और जाना है। उसे इस बात का एहसास है कि वह पाप में है, और उसे पाप से उद्धार पाने की आवश्यकता है। और उसे इस बात का भी एहसास है कि इस अद्भुत सृष्टि का कोई बनानेवाला है। वह जानता है, और इस बात को महसूस करता है, कि कोई ऐसी अद्भुत, महान् और अदृश्य शक्ति है जो सारी सृष्टि पर प्रभुता रखती है। इन सब बातों को मनुष्य महसूस करता है; उसे इन सब बातों का आभास है। और अपनी आंतरिक

भूख को मिटाने के लिये उसने अपने लिये अनेकों धर्मों का और धार्मिक रीति-रिवाज़ों का निर्माण कर लिया है। सर्व-शक्तिमान परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये, उसे आदर और सम्मान देने के लिये मनुष्य उसे भांति-भांति की वस्तुएं अर्पण करता है और अपनी बुद्धि से तरह-तरह की विधियों के द्वारा उसकी अराधना करता है।

पर जब तक मनुष्य परमेश्वर को हकीकत में नहीं जान लेता, और जब तक वह उसकी इच्छा को जानकर उस पर अमल नहीं कर लेता, तब तक वह अंधकार में ही रहेगा। वह पाप में है, और पाप में ही इस संसार से चला जाएगा, और अनन्तकाल में हमेशा तक अपने पाप में ही रहेगा। पर बाइबल में परमेश्वर हमें यह बताता है, कि वह पृथ्वी पर किसी भी मनुष्य का नाश नहीं चाहता। वह सब को बचाना चाहता है, वह सबका उद्धार करना चाहता है, और सब को अनन्त जीवन देना चाहता है। और इसी खास काम को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने स्वर्ग से अपने पुत्र यीशु मसीह को पृथ्वी पर भेजा था। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर का वचन देहधारी होकर पृथ्वी पर स्वर्ग से उतर आया। (यूहन्ना 1 : 14)। यानि प्रभु यीशु मसीह मनुष्य का उद्धार करने के लिये स्वर्ग से ज़मीन पर आ गया!

प्रभु यीशु मसीह के बारे में एक जगह हम बाइबल में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि जब वह पृथ्वी पर था, तो "सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उसकी सुनें। और फ़रीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है।" यह बात सुनकर यीशु ने दृष्टान्त देकर उन से यूं कहा, कि, "तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हो, और उन में से एक खो जाए; तो निन्नांनवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक वह मिल न जाए खोजता न रहे? और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर

उठा लेता है। और घर में आकर अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है। मैं तुम से कहता हूं," यीशु ने कहा, "कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नावें ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।"

"या कौन ऐसी स्त्री होगी," यीशु ने आगे कहा, "जिसके पास दस सिक्के हों, और उन में से एक खो जाए : तो वह दीया जलाकर और घर झाड़-बुहारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे? और जब मिल जाता है, तो वह अपनी संखियों और पड़ोसिनों को इकट्ठी करके कहती है, कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है। मैं तुम से कहता हूं." यीशु ने कहा, "कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।" (लूका 15 : 1—10)।

यद्यपि ये दृष्टान्त यीशु ने लोगों के सामने आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले रखे थे। और यद्यपि इन दृष्टान्तों के विशेष महत्व को वे लोग बड़ी ही अच्छी तरह से समझ सकते थे, क्योंकि उनमें से कई एक भेड़पाल थे और वे एक भेड़ की कीमत जानते थे। और ऐसे ही जो स्त्रियां उस समय सिक्कों की मालाएं पहनती थीं वे भी सोने के एक सिक्के की कीमत से परिचित थीं। लेकिन जो पाठ यीशु ने उन लोगों को इन दृष्टान्तों के द्वारा उस समय सिखाया था वह आज हमारे लिये भी उतना ही विशेष और महत्वपूर्ण है जितना कि उस वक्त उन लोगों के लिये था।

वे लोग मनुष्य की आत्मा के मूल्य से अपरिचित थे। वे लोग इन्सान की आत्मा के बड़े महत्व से अनजान थे। लेकिन यीशु उन्हें यह सिखाना चाहता था, कि जैसे वह आदमी अपनी एक खोई हुई भेड़ के मिल जाने पर खुश होता है। और जैसे कि वह औरत अपने

एक खोए हुए सिक्के को पाकर खुश होती है। वैसे ही पाप में खोया हुआ जब कोई भी एक इन्सान अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास लौट आता है, तो परमेश्वर के स्वर्ग में ऐसे ही आनन्द होता है। क्योंकि जैसे इन्सान अपनी एक खोई हुई चीज़ की कीमत को जानता है, और उसके खो जाने पर उसके लिये दुखी होता है, और जब तक वह मिल न जाए उसे ढूंढता रहता है, और जब वह चीज़ उसे मिल जाती है तो उस से खुश होता है। ऐसे ही परमेश्वर भी हर एक मनुष्य के मूल्य को, जिसे उस ने अपने ही स्वरूप और अपनी ही समानता पर बनाया था, जानता है। उसे मनुष्य के पाप में खो जाने से दुख है, क्योंकि वह जानता है कि पाप के कारण मनुष्य उस से दूर होकर नरक में अनन्त विनाश का दण्ड पाएगा। इसीलिये, वह यीशु में होकर, उसके द्वारा पाप में खोए हुए हर एक इन्सान को ढूंढने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था और अब वह चाहता है, कि हम अपने जीवन के प्रत्येक पाप से अपना मन फिरा लें और उसके पास वापस आ जाएं।

जिस आदमी की भेड़ खो गई थी, वह अपनी उस भेड़ को भूखा-प्यासा रहकर कंटीली झाड़ियों से और पत्थरीले रास्तों से गुज़रकर जंगलों में उस वक्त तक ढूंढ़ता रहा जब तक वह उसे मिल नहीं गई। और जब वह उसे मिल गई तो उसे अपने दुख-तकलीफ़ों का कोई एहसास न रहा, पर वह अपनी खोई हुई भेड़ के मिल जाने से खुश था। और वह स्त्री, जिसने अपने खोए हुए सिक्के को ढूंढ़ने में दिन-रात एक कर दिया; जो भूखी-प्यासी उस खोए हुए सिक्के को ढूंढ़ने में परीश्रम करती रही—वह इस बात से खुश थी कि उसका खोया हुआ कीमती सिक्का उसे फिर मिल गया था। उसने इस बात को महसूस नहीं किया था कि वह रात-दिन, भूखी-प्यासी उसे ढूंढ़ने में लगी रही थी और इतनी मुसीबत उसने उठाई थी। उसे इस बात का दुख नहीं था। पर वह उसके मिल जाने से खुश थी!

ऐसे ही, यद्यपि परमेश्वर हमें बचाने के लिये, यीशु में होकर स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया। और उसने हमारे कारण पृथ्वी पर बड़े-बड़े दुख उठाए। और हमारे कारण वह पापियों के संग गिन गया। और हमारे पापों का दण्ड पाने के लिये उसने क्रूस के ऊपर अपमान जनक मृत्यु को भी उठा लिया। तौभी जब हम में से कोई भी एक इन्सान उसमें विश्वास लाकर, और पाप से अपना मन फिराकर, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर उसके पास वापस आ जाता है, तो इस बात से परमेश्वर बड़ा ही प्रसन्न होता है। यद्यपि उसने मनुष्य को पाप से बचाने के लिये इतना बड़ा बलिदान दिया था। पर वह इन्सान की आत्मा की कीमत को जानता है, और उसके निकट इस से अधिक और कोई प्रसन्नता की बात नहीं हो सकती, कि कोई जन पाप से अपना मन फिराकर उसके पास वापस लौट आए। प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि कोई मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले परन्तु अंत में अपनी ही आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?

परमेश्वर को आप की चिन्ता है। वह आप को पाप के दण्ड से बचाना चाहता है। क्या आप उसके पुत्र में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उसके पास आने को तैयार हैं?

मार्ग, सच्चाई और जीवन यीशु ही है

आज के पाठ में मैं आपका ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं, कि अगर आप पृथ्वी पर एक ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं जिससे परमेश्वर की बड़ाई, स्तुति और महिमा हो, तो आप को ऐसा जीवन परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह से मिल सकता है। यूं तो दुनिया में बहुत से गुरु और संत और भगवान और देवी-देवता हैं, पर उन में से कोई भी उस परमेश्वर के तुल्य नहीं है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को और जो कुछ उन में है उन सब वस्तुओं को बनाया है। इसलिये आज मैं आपका ध्यान पृथ्वी और स्वर्ग के उस सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर की ओर दिलाकर आपको यह बताना चाहता हूं, कि वह आप को एक नई ज़िन्दगी देना चाहता है; वह आप को एक नया इन्सान बनाना चाहता है।

मान लीजिए, आप किसी जंगली और सूनसान इलाके से होकर गुज़र रहे हैं, कि अचानक आप का ध्यान एक छोटे से बच्चे की तरफ जाता है, जो गंदा और मैला-कुचैला रोता हुआ इधर-उधर भटक रहा है। आपको उस छोटे बच्चे पर तरस आ जाता है, क्योंकि वह मासूम, नासमझ और असहाय है। सो आप उसे अपने घर ले आते हैं। अब सबसे पहिले आप यह काम करेंगे, कि आप उसे नहलाएंगे, उसे साफ़ और सुथरा करके आप उसे साफ़ कपड़े पहनाएंगे, और फिर आप उसे कुछ खाने को देंगे।

क्या आप जानते हैं, कि जब परमेश्वर स्वर्ग से इस पृथ्वी के ऊपर देखता है, तो उसे संसार में प्रत्येक मनुष्य पाप और अधर्म के अन्धेरे जंगल में खोया हुआ दिखाई पड़ता है। पवित्र बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि, "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।" (यशायाह 59 : 2)। हम सब परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता के स्तर

से बहुत नीचे गिर चुके हैं। हमारे काम, हमारी बात-चीत, और हमारा चाल-चलन, सब कुछ परमेश्वर के विरुद्ध है। बाइबल कहती है, कि सबके सब लोग भेड़ों की तरह संसार-रूपी जंगल में अपनी राह से भटक गए हैं और हम सब ने अपना-अपना मार्ग ले लिया है। (यशायाह 53 : 6)। और यह सच्चाई इस बात से प्रकट है, कि हम सब एक ही परमेश्वर के बनाए हुए लोग उसे एक ही तरह से नहीं जानते। हम सब यह तो जानते हैं, कि एक परमात्मा है जिसने सारी वस्तुओं की सृष्टि की है, और जिसने हम सब को बनाया है। पर हम सब यह नहीं जानते कि वह वास्तव में है कौन। और इसी कारण से पृथ्वी पर आज मनुष्यों के बीच में नाना प्रकार के धर्म हैं! सब लोग एक ही परमेश्वर के मार्ग पर चलना तो चाहते हैं—लेकिन उसका मार्ग कोई भी नहीं जानता। सो हर एक ने अपनी-अपनी बुद्धि से उसके पास पहुंचने का मार्ग ढूंढ़ निकाला है। सब लोग अलग-अलग मार्गों से होकर उस एक ही परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं। सब लोग उसकी उपासना और आराधना अलग-अलग रीतियों से करते हैं। कोई उसे कुछ मानता है, तो कोई कुछ और मानता है। सब धर्मों के लोगों ने अपने-अपने रीति-रिवाज़ और धार्मिक त्यौहार बना रखे हैं। और सभी अपनी-अपनी विधियों के द्वारा उस सर्व-शक्तिमान को प्रसन्न करके उसके पास पहुंचना चाहते हैं। यह एक प्रकार का झमेला है; एक बहुत बड़ा अन्धकार है। और इन्सान इस धार्मिक या आत्मिक अन्धकार का शताब्दियों से ऐसा आदि हो चुका है कि अब उस में उसे कोई बुराई ही नज़र नहीं आती। आज मनुष्य केवल इस बात से सन्तुष्ट है, कि वह किसी धर्म में है—किसी की पूजा करता है; और किसी की आराधना करता है। अपने मन में वह सन्तुष्ट है; वह सोचता है कि वह एक ठीक राह पर चल रहा है। पर सच्चाई यह है, कि वह एक बड़े अन्धकार में खोया हुआ है। वह परमेश्वर से दूर और अलग है। वह उसे जानता नहीं। वह

परमेश्वर के मार्ग पर नहीं, परन्तु वास्तव में अपने बाप-दादों की राह पर चल रहा है। हर एक दिन हज़ारों लोग इस दुनियां से चले जाते हैं। उन में से बहुतेरे ऐसे होते हैं जो किसी न किसी रूप में परमेश्वर को मानते हैं, और किसी न किसी ढंग से उसकी आराधना करते हैं। अपनी समझ में वे सही काम करते हैं, पर परमेश्वर की नज़र में वे अन्धकार में हैं। उसके लेखे में वे अन्धकार में खोए हुए हैं। और जब वे इस संसार से चले जाते हैं तो वे एक अन्धकार में से निकलकर दूसरे अन्धकार में पहुंच जाते हैं। पवित्र बाइबल कहती है कि, "डरपोकों, और, अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्ति पूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।" (प्रकाशित-वाक्य 21 : 8)। यानि शारीरिक मौत के बाद, ऐसे लोगों के लिये यह आत्मिक मौत होगी!

पर यद्यपि मनुष्य ने अपने मन की अनर्थ रीति पर चलकर परमेश्वर को छोड़ दिया है, तौभी परमेश्वर ने मनुष्य को पाप के अन्धकार में भटकने को नहीं छोड़ा है। यह सच है, कि लोग आज अन्धेरे में हैं; वे एक ऐसे परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं जिसे वे नहीं जानते। वे उसकी आराधना और उपासना ऐसे-ऐसे रीति-रिवाज़ों के द्वारा कर रहे हैं जिनका अधिकार उन्हें परमेश्वर ने नहीं दिया है। उनके धर्म के सारे काम परमेश्वर की दृष्टि में व्यर्थ और घृणाजनक हैं, क्योंकि वे उसकी आज्ञा से नहीं हैं। पर मनुष्य आज अन्धकार में स्वयं अपनी ही इच्छा से है, क्योंकि वह परमेश्वर की मर्ज़ी को स्वीकार करके उस पर नहीं चलना चाहता। परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है। वह उसे नरक की दूसरी मृत्यु से बचाना चाहता है। उसकी पुस्तक, बाइबल हमें बताती है, कि वह मनुष्य को पाप के अन्धकार में से निकालने के लिये और उसे पाप के दण्ड से बचाने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया है।

प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास रखे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" क्योंकि, "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है, कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और, ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" (यूहन्ना 3 : 16-21)।

प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने जगत में ज्योति के रूप में भेजा था। वह परमेश्वर का मार्ग है। उसके द्वारा हम जानते हैं, कि वास्तव में सच्चाई क्या है, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से आया था। वह पृथ्वी पर उन लोगों को एक नया जीवन देने के लिये आया था जो अपने पाप और अधर्म के कामों के कारण मरे हुए थे। उसने कहा था, कि मैं खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने को आया हूं। (लूका 19 : 10)। और उस ने कहा था, कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14 : 6)।

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि कोई भी व्यक्ति जब यीशु मसीह में विश्वास ले आता है, और संसार के प्रत्येक अंधकारपूर्ण काम से अपना मन फिराकर यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों

की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेता है, (मरकुस 16 : 15, 16; प्रेरितों 22 : 16; 2 : 38), तो परमेश्वर उसके सब पापों को क्षमा कर देता है। और ऐसा वह इस कारण करता है, क्योंकि उसका पुत्र हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर हमारे लिये मरा था। बाइबल कहती है, कि यीशु मसीह का लोहू हमारे पापों के छुटकारे का दाम था। बाइबल में लिखा है, "कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने अर्थात् नाशमान् वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।" (1 पतरस 1 : 18,19)।

परमेश्वर आपको अपने पुत्र यीशु मसीह के लोहू में धोना चाहता है। वह आप को पाप और अधर्म से पूरी तरह से साफ़ करके अपने पुत्र यीशु में एक नया जीवन देना चाहता है। क्या आप उसके निमंत्रण को स्वीकार करेंगे? प्रभु यीशु ने कहा था :

"हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ : मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती 11 : 28)।

क्या आप उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उसके पास आएंगे? कितनी अद्भुत बात है यह, कि परमेश्वर इतना महान् होते हुए भी हम कमज़ोर और नालायक इन्सानों को बचाना चाहता है! वह हम से ऐसा विशाल प्रेम रखता है!

परमेश्वर सब लोगों को मन फिराने की आज्ञा देता है

मेरे लिये इस से बड़ी आशीष की बात और अन्य कोई नहीं हो सकती कि सर्वशक्तिमान ने मुझे यह एक और अवसर दिया है कि मैं उसके सच्चे और ज़िन्दा वचन को आपके सामने रखूं। इस कार्यकर्म का और मेरे प्रचार का उद्देश्य यही है, कि आप उस सर्वशक्तिमान को जानें जो वास्तव में परमेश्वर है, और संसार के पुराने रीति-रिवाज़ों से और कथा-कहानियों से अपना मन फिराकर उसके पास आएं और उसके सत्य मार्ग पर चलें। आज धार्मिक दृष्टिकोण से संसार में बड़ा ही अंधकार फैला हुआ है। लोगों के लाखों ईश्वर और भगवान हैं, जिन्हें वे रात दिन पूजते हैं और उन्हें चढ़ावे चढ़ाते हैं। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है, कि ये सब पृथ्वी पर कहां से आए हैं? सच्चाई यह है, कि शताब्दियों से मनुष्यों की कल्पना ने इन सब को जन्म दिया है। और लोग आज उन्हें इसलिये मानते हैं क्योंकि उन से पहिले भी लोग उन्हें ऐसे ही मानते थे।

बाइबल में एक जगह हम एथेंस के लोगों के बारे में पढ़ते हैं। ये लोग बड़े ही धार्मिक थे। वे अपना बहुत समय पूजा-पाठ और आराधना में व्यतीत करते थे। उनके पास पूजने की बहुत सी वस्तुएं थीं। मिट्टी और पत्थर से लेकर सोने और चांदी तक की विभिन्न आकृतियां उन्होंने बना रखीं थीं। और ऐसे ही एक बड़ी वेदी भी उन्होंने बनवाई थी जिस पर उन्होंने लिखा था *"अनजाने ईश्वर के लिये।"* बाइबल कहती है, कि जब प्रेरित पौलुस इस नगर में पहुंचा तो वह अपनी आत्मा में बड़ा ही विचलित हुआ, और उसने नगर के लोगों को इकट्ठा करके उनसे कहा, कि, "ऐसा लगता है कि तुम सब बातों में बड़े ही धार्मिक हो। क्योंकि जब मैं

घूमते-फिरते तुम्हारी पूजने की वस्तुओं का अवलोकन कर रहा था, तो मैंने एक ऐसी वेदी पाई जिस पर यह लिखा था, 'अनजाने ईश्वर के लिये।' इसलिये जिसे तुम अनजाने में पूजते हो, उसी का संदेश मैं तुम्हें सुनाता हूं। परमेश्वर जिसने जगत और उसमें की सब वस्तुओं को बनाया है, वही स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है, और वह हाथों के बनाए हुए मन्दिरों में निवास नहीं करता। और न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा-टहल होती है, मानो कि उसे किसी चीज़ की आवश्यकता है। क्योंकि वह तो स्वयं ही सब को जीवन, श्वास और सब कुछ प्रदान करता है..... उसी में हम जीवित रहते, चलते-फिरते और अस्तित्व रखते हैं," सो, "परमेश्वर की संतान होकर हमें यह कदापि नहीं समझना चाहिए कि परमेश्वर सोने-चांदी अथवा पत्थर की किसी कारीगर के समान है, जो मनुष्य की कला और कल्पना से गढ़ा गया हो।" और फिर उसने उनसे यूं कहा, कि, "इसलिये अज्ञानता के समयों की उपेक्षा करके परमेश्वर अब हर जगह के सब मनुष्यों को आज्ञा देता है कि पश्चाताप करें। क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा, जिसे उसने ठहराया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा : और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है।" (प्रेरितों 17 : 22—31)।

और यही बात आज मैं आप सब के सामने रखना चाहता हूं। मैं आप सब को बताना चाहता हूं कि परमेश्वर ने एक ऐसा दिन निश्चित किया है जिसमें वह हर एक इन्सान का न्याय करेगा। इस से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, कि आप कौन हैं, आप किस जाति और किस धर्म के हैं। इस से भी कुछ अन्तर नहीं पड़ता, कि आप गरीब हैं या अमीर हैं, या आप क्या काम करते हैं। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर एक दिन सारे जगत का न्याय करेगा। इसलिये आप के जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि आप

अपने आप को जांचकर और परखकर यह निश्चित कर लें कि क्या आज आप स्वर्ग और पृथ्वी के उस सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर के मार्ग पर चल रहे हैं या नहीं जिसने सब वस्तुओं को रचा है और जो एक दिन हम सब का न्याय करेगा। और अगर आज आप एक ऐसे मार्ग पर चल रहे हैं जिसे उसने नहीं दिया है, तो आप को चाहिए कि आप अपना मन फिराकर उसकी इच्छा पर चलें। आप धार्मिक रूप से अन्धकार में हो सकते हैं। शायद आप एक अनजाने और काल्पनिक परमेश्वर की उपासना कर रहे हैं। कदाचित आप ऐसे रीति-रिवाज़ों और विधियों का पालन कर रहे हैं जो परमेश्वर के अधिकार से नहीं हैं, बल्कि मात्र मनुष्यों के धर्मोपदेश हैं। आप के जीवन में अनेकों बुराईयां और पाप भी हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर आप के प्रत्येक पाप को क्षमा करने को तैयार है। अपनी पुस्तक बाइबल में हमारा प्रेमी और दयालू परमेश्वर हम से यूं कहता है, कि, "आओ, हम आपस में वाद-विवाद करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।" (यशायाह 1 : 18)। परमेश्वर कहता है, कि, "क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे? परन्तु जब धर्मी अपने धर्म से फिरकर टेढ़े काम, बरन दुष्ट के सब घृणित कामों के अनुसार करने लगे, तो क्या वह जीवित रहेगा? जितने धर्म के काम उस ने किए हों, उन में से किसी का स्मरण न किया जाएगा। जो विश्वासघात और पाप उसने किया हो, उसके कारण वह मर जाएगा.....परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे और न्याय और धर्म के काम करे, तो वह न मरेगा; वरन जीवित ही रहेगा। उसने जितने अपराध किए हों, उन में से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा।" (यहेजकेल 18 : 23—24, 21—22)।

परमेश्वर आप के सब अपराधों और अधर्म के कामों को क्षमा करना चाहता है। वह जानता है, कि आप अपना जीवन उस से दूर रहकर व्यतीत कर रहे हैं। वह जानता है, कि आप एक गलत राह पर चल रहे हैं। लेकिन वह आप से प्रेम करता है। वह सारे जगत के सब लोगों से प्रेम करता है। वह पृथ्वी पर सब लोगों को अपने बेटे और बेटियों की तरह देखता है। और उसे इस बात से बड़ा ही दुख होता है, कि जिस इन्सान को आरम्भ में उसने अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर उत्पन्न किया था, और जिसे उसने अपनी महिमा के लिये बनाया था, वही उसे छोड़कर अब उस से दूर हो गया है, और ऐसे-ऐसे काम कर रहा है जो उसकी दृष्टि में बुरे हैं।

जब बच्चे माता-पिता का कहना मानते हैं, और उनके बताए रास्ते पर चलते हैं, और अच्छे काम करते हैं, तो मां-बाप को इस बात से बड़ी ही खुशी होती है। लेकिन अगर वे उनका कहना नहीं मानते, और उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते, और बुरे काम करते हैं, तो माता-पिता को इस बात से बड़ा ही दुख होता है। ऐसे बच्चे अपने मां-बाप के लिये शर्म और दुख को पैदा करते हैं। और जब हमारा बनानेवाला परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता, स्वर्ग से हम सब को देखता है, तो वह ऐसे ही दुख और शर्म को महसूस करता है। क्योंकि वह यह देखता है, कि मेरी संतान मेरी इच्छा पर नहीं चल रही है, और उन्होंने मेरे मार्ग को नहीं अपनाया है, और अपने कामों से और अपने चाल-चलन से वे बुराई कर रहे हैं। जब लोग उस सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर को परमेश्वर न कहकर, पृथ्वी की निर्जीव और नाशमान वस्तुओं को परमेश्वर करके मानते हैं, और उन से डरते हैं, और उनका आदर करते हैं तो उसे इस बात से बड़ा दुख होता है। और जब लोग उसकी मर्ज़ी पर न चलकर अपने मन की अनर्थ रीतियों के अनुसार चलते हैं और ऐसे-ऐसे काम करते हैं जिनकी आज्ञा उसने नहीं दी है, तो

परमेश्वर को इस बात से भी बड़ा ही दुख होता है। जब हम अपने मुंह से या अपने शरीर के किसी भी अंग से कोई भी बुरा काम करते हैं, तो हम अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर को दुख पहुंचाते हैं। हमें चाहिए कि हम सब अपने-अपने चाल-चलन पर गौर करें।

क्या आप अपना जीवन परमेश्वर के विरोध में व्यतीत कर रहे हैं? वह चाहता है कि आप अपना मन फिराकर उस के पास वापस लौट आएं। क्या आप जानते हैं, कि आप के और सारे जगत के प्रत्येक पाप का प्रायश्चित करने के लिये परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान किया था? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर ने हम सबके लिये दे दिया था। यीशु के द्वारा आज हम सब परमेश्वर के पास आ सकते हैं। वह हम सब के पापों का छुटकारा है। जब हम यीशु में विश्वास ले आते हैं और अपना जीवन उसकी आज्ञाओं पर चलकर व्यतीत करते हैं, तो बदले में, यीशु की मृत्यु के कारण, परमेश्वर हमारे सारे पापों को क्षमा कर देता है। और ऐसे उसके साथ हमारा मेल हो जाता है।

सबसे बड़ी ज़रुरत, इसलिए, हरएक इन्सान की आज यह है कि वह प्रत्येक पाप से और अंधकार के कामों से और अपने मन की अज्ञानता के कामों से अपना मन फिराए और सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर के पास वापस आकर उसकी मर्ज़ी पर चले। परमेश्वर ने अपनी सारी इच्छा को सब लोगों के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में व्यक्त किया है। इसलिये यह बड़ा ही ज़रूरी है हम सब यह जाने कि बाइबल में क्या लिखा है। क्योंकि बाइबल परमेश्वर के वचन की किताब है।

सब को मन फिराने की आवश्यकता क्यों है?

बाइबल की एक बड़ी ही स्पष्ट और महत्वपूर्ण शिक्षा यह है, कि सब लोग सब जगह अपना मन फिराएं। आरम्भ से लेकर अन्त तक बाइब्नल में हम यही पढ़ते हैं कि अगर लोग अपना मन नहीं फिराएंगे तो वे सब अपने पापों में ही नाश हो जाएंगे। इस बात को हम बाइबल के पुराने नियम में पढ़ते हैं, और इसी बात को हम बाइबल के नए नियम में भी पढ़ते हैं। पुराने नियम में हम उन सब लोगों के बारे में पढ़ते हैं जो नूह के समय में रहते थे। बाइबल कहती है, कि उस समय उन का अधर्म यहां तक बढ़ गया था कि उनकी बात-चीत, उनका रहन-सहन, उनका चाल-चलन, और यहां तक, कि उनके मनों में जो विचार भी पैदा होते थे वे सब के सब बुरे थे। और बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने उस समय धर्मी नूह को यह प्रेरणा दी थी की वह उन लोगों में जाकर इस बात का प्रचार करे कि वे सब अपना-अपना मन फिराकर उस के मार्ग पर लौट आएं। कई वर्षों तक नूह उन के बीच में प्रचार करता रहा था लेकिन उन में से एक ने भी अपना मन नहीं फिराया था।

इसी प्रकार से, हम उन भविष्यद्वक्ताओं के बारे में भी बाइबल में पढ़ते हैं, जिन्हें परमेश्वर ने अपनी कौम इस्त्राएल के बीच में भेजा था। उन्होंने लोगों के बीच में जाकर मन फिराने का प्रचार किया था। परन्तु, मन फिराने के विपरीत उन लोगों ने उन का तिरिस्कार किया था और उन का हंसी-मज़ाक उड़ाया था और यही बात हम यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में भी पढ़ते हैं। परमेश्वर ने उसे भेजा था कि वह जाकर मन फिराव का प्रचार करे। और यही प्रचार करने के कारण उसे मार भी डाला गया था। फिर हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में देखते हैं। वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था, और उसने यह प्रचार किया था कि सब लोग अपना मन फिराएं। उसने कहा था, कि अगर तुम अपना

मन नहीं फिराओगे तो तुम सब नाश होगे। (लूका 13 : 3)।

मनुष्य को पाप से मन फिराने की सख्त आवश्यकता है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि सबने पाप किया है। (रोमियों 3:23)। बाइबल कहती है कि अगर हम में से कोई यह कहे कि मुझ में कोई पाप नहीं है तो वह अपने आपको धोखा देता है। (1 यूहन्ना 1:8)। क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में सब लोगों ने उसके विरुद्ध पाप किया है। पृथ्वी पर कोई एक ऐसा इन्सान नहीं है जो परमेश्वर के लेखे में पापी नहीं है। इसीलिये बाइबल कहती है, कि अगर हम कहें कि हमने पाप नहीं किया है तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं। (1 यूहन्ना 1:10)। कोई इन्सान सफ़ेद या गेरुए कपड़े पहिनकर मनुष्यों को प्रभावित कर सकता है, कि वह कोई साधू-संत या धर्मात्मा या भगवान है। परन्तु परमेश्वर के लेखे में वह इंन्सान भी उतना ही पापी है जितना कि सड़क पर चलनेवाला एक आम आदमी। क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों को ऊपर से नहीं परन्तु भीतर से देखता है। और इसीलिये अपने वचन की किताब में वह यूं कहता है, "कि वे सब के सब पाप के वश में हैं... कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं, कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं। उन का गला खुली हुई कब्र है : उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है : उन के होठों में सांपों का विष है। और उन का मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है।" (रोमियों 3 : 10-14)। इसलिये परमेश्वर चाहता है कि सब लोग अपना-अपना मन फिराएं।

मन फिराने का अर्थ है, एक बदलाव या परिवर्तन लाना और यदि मनुष्य का मन बदल जाएगा तो उसका सारा जीवन बदल जाएगा, क्योंकि मन मनुष्य के जीवन का सोता है। अपने चेलों से प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि जो कुछ मुंह में जाता है, वह पेट में पड़कर संडास में निकल जाता है, पर जो कुछ मुंह से निकलता

है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा, मन ही से निकलती है, और ये ही सब बातें मनुष्य को अशुद्ध करती हैं। (मत्ती 15:17-20)।

बाइबल में हम रोम के लोगों के बारे में पढ़ते हैं। प्रेरित पौलुस ने उन से कहा था, कि, "परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।" (रोमियों 6:17, 18)। ये लोग पहले पाप के दास थे, यानि वे अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के विरोध में बिता रहे थे। पर जब उन्होंने प्रभु यीशु मसीह के उपदेश को सुना था तो उन्होंने अपना मन फिराया था और उसके उपदेश को माना था और इस तरह से उनके जीवन में एक बहुत बड़ा बदलाव आ गया था। पहले वे पाप की सेवा करते थे, परन्तु अब वे धार्मिकता की सेवा करने लगे थे। उनका जीवन बदल गया था। उनका मार्ग बदल गया था। उनका उद्देश्य बदल गया था। और यही वास्तविक मन फिराव है। सिर्फ़ नाम का बदलाव नहीं, केवल बाहरी परिवर्तन नहीं. पर उन्होंने अपने आपको भीतर से बदल डाला था।

फिर हम इफ़ेसुस के लोगों के बारे में भी बाइबल पढ़ते हैं। लूका़ बाइबल में लिखकर हमें बताता है, कि जब उन लोगों ने परमेश्वर के वचन को सुना था, तो उनमें से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया था। और लिखा है, कि, "जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से बहुतेरों ने आकर अपने-अपने कामों को मान लिया और प्रकट किया। और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हज़ार रुपए की निकलीं।" (प्रेरितों 19:18, 19)। ये लोग अपने जीवनों को वैसे ही व्यतीत कर

रहे थे जैसे कि आज अधिकांश लोग कर रहे हैं। जो कुछ भी वे अच्छा समझते थे, वही किया करते थे। कोई किसी को पूजता था तो कोई किसी को मानता था। वे ताबीज़-गन्डे और जादू-टोने किया करते थे। वे सब सच्चे परमेश्वर से दूर थे। लेकिन जब उन्होंने उसके बारे में सुना तो उन्हें विश्वास हुआ। और उन्होंने सब के सामने मान लिया कि पहले वे गलत थे। और उन के अगुवों ने अपनी पोथियों इत्यादि को लाकर, जिनका दाम लगभग पचास हज़ार रुपए था, सबके सामने जला दिया। इसे कहते हैं हृदय-परिवर्तन-मन का बदलाव। वे केवल दिखावे के लिये ही नहीं बदले, परन्तु उन्होंने अपने आपको भीतर से बदल डाला। और कितना बड़ा दाम उन्हें इस बदलाव के लिये देना पड़ा था.

और फिर ऐसे ही हम, पौलुस के समय में रहनेवाले थिस्सलुनीके के लोगों के बारे में भी पढ़ते हैं। उन्हें लिखकर प्रेरित ने कहा था, कि, "तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की, जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं, कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ, और तुम क्योंकर मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।" (1 थिस्सलुनीकियों 1:6-9)।

यहां हम ऐसे लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जो पहले मूरतों को पूजते थे। उनके पास पैसे की मूरत थी, उनके पास चांदी और सोने की मूरतें थीं, उनके पास लकड़ी, पत्थर और पशुओं और मनुष्यों की मूरतें थीं। लेकिन जब उन्होंने उस सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर के बारे में सुना जिसने सारी सृष्टि को बनाया है, और जब उन्होंने

यह सुना कि वे अपना जीवन उसके विरोध में बिता रहे हैं, तो उन्होंने अपना मन फिराया, यानि उन्होंने अपना विचार और अपना नज़रिया बदल लिया।

क्या आपने अपना मन सचमुच में फिराया है? क्या आपने अपने मन को बदला है? प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि तुम मन नहीं फिराओगे तो तुम सब अपने पापों में नाश होगे। (लूका 13:5)। शायद आज आप का जीवन रोम के उन लोगों की तरह है जो अपनी ज़िन्दगी पाप में व्यतीत कर रहे थे। या शायद आप इफेसुस के उन लोगों की तरह अपना जीवन जादू-टोनों में व्यतीत कर रहे हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में घृणित काम हैं। या फिर हो सकता है, कि आप थिस्सलुनीकियों के लोगों की तरह सच्चे और ज़िन्दा परमेश्वर से दूर रहकर मूरतों की सेवा कर रहे हैं। पर आज आप जहां कहीं भी हैं, परमेश्वर चाहता है कि आप अपना मन फिराकर उस के पास वापस लौट आएं।

आपके प्रत्येक पाप का प्रायश्चित करने के लिये उस सच्चे और जीवित परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह का लोहू बहाया था। और यदि आप उस में विश्वास लाएंगे और उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लेंगे तो वह आप के हर एक पाप को क्षमा करेगा। वह आप से प्रेम करता है। वह एक जीता-जागता, सच्चा और ज़िन्दा, और सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है। क्या आप अपना मन फिराकर उसके पास आने को तैयार हैं?

पाप क्या है ?

आज मैं आप का ध्यान इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि पाप वास्तव में क्या है। हम पाप के बारे में सुनते हैं। बाइबल कहती है कि सब ने पाप किया है और इस कारण से सब परमेश्वर से दूर हैं। बाइबल हमें यह भी बताती है, कि पाप की मजदूरी या पाप का फल मृत्यु है, और पाप के ही कारण मनुष्य नरक में अनन्त विनाश का दन्ड पाएगा। लेकिन पाप क्या है? झूठ बोलना पाप है। चोरी करना पाप है। हत्या और व्यभिचार करना पाप है। लेकिन मान लें, थोड़ी देर के लिये, कि अगर कोई इन्सान झूठ नहीं बोलता और चोरी नहीं करता, और हत्या और व्यभिचार नहीं करता। तो क्या वह पापी नहीं है? मान लें यह भी, कि यदि कोई मनुष्य बड़ा ही अच्छा नैतिक जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न कर रहा है, और वह पूजा-पाठ करता है, वह दान करता है, और अच्छे-अच्छे काम करता है। क्या वह इन्सान पापी नहीं है? फिर एक ऐसे मनुष्य को ले लें, जो जगत से सन्यास लिये हुए है, वह सफ़ेद या गेरुआ रंग के कपड़े पहिनता है, और दुनियादारी से अलग रहने का प्रयत्न करता है। वह साधु या संत कहलाता है, या वह पुजारी और पंडित कहलाता है, या वह एक पादरी या पोप कहलाता है। प्रश्न यह है कि क्या वह जन एक पापी नहीं है? क्या उस में कोई पाप नहीं है?

पवित्र बाइबल, यानि परमेश्वर के वचन की पुस्तक कहती है, कि सबने पाप किया है! (रोमियों 3:23)। और सब के सब पाप के वश में हैं, और कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। (रोमियों 3:9, 10)। और बाइबल कहती है, कि जो आदमी यह कहता है, कि मुझ में कोई पाप नहीं है तो वह अपने आप को धोखा देता है, और वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है (1 यूहन्ना 1:8, 10), क्योंकि परमेश्वर ने ही अपनी पुस्तक में हमें यह बताया है कि सब मनुष्यों

ने पाप किया है, और सब पाप के वश में हैं, और एक भी धर्मी नहीं है। जब हम इन्सान, किसी इन्सान को पवित्र या धर्मी या भगवान मानने लगते हैं तो हम इस आधार पर ऐसा करते हैं, क्योंकि हमने उसके मुंह से बड़े अच्छे-अच्छे उपदेश सुने हैं, और उसके कुछ अच्छे कामों को देखा है। लेकिन हम उस व्यक्ति के मन को नहीं जानते। उसके मन में क्या है? उसके मन के विचारों में क्या है? उसके मन का उद्देश्य क्या है? वह आदमी भीतर से क्या है? यह हम नहीं जानते। और हम जान भी नहीं सकते। केवल परमेश्वर ही, जिसने मनुष्य को बनाया है, मनुष्य को वास्तव में जानता है। हम केवल देखकर और सुनकर विश्वास करते हैं—परन्तु परमेश्वर वह है जो इंन्सानों को ऊपर ही से नहीं बल्कि भीतर से भी जानता है—और बड़ी ही अच्छी तरह से जानता है। बाइबल में हम एक जगह पढ़ते हैं कि परमेश्वर कहता है, कि "मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, और न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच-विचारों में, आकाश और पृथ्वी का सा अन्तर है।" (यशायाह 55:8, 9)। हम एक इन्सान को ऊपर से ही देखकर उसके बारे में अपना निश्चय बना लेते हैं। परंतु केवल परमेश्वर ही मनुष्य को भलि-भांति जानता है। और वह कहता है, कि सब पाप के वश में हैं और सब ने पाप किया है।

परमेश्वर के देखने का तरीका अलग है। वह ऐसे नहीं देखता, जैसे मनुष्य देखता है। वह ऐसे नहीं सोचता, जैसे मनुष्य सोचता है। जिस वस्तु को हम अच्छा कहते हैं वही चीज़ उसकी दृष्टि में घृणाजनक और पापमय हो सकती है। और सच्चाई यह है, कि परमेश्वर ने हमें अपनी एक व्यवस्था दी है, उसने हमें अपने नियम दिए हैं। और जब हम उसकी व्यवस्था पर नहीं चलते, और उसके नियमों को नहीं मानते तो हम पाप करते हैं। पवित्र बाइबल, परमेश्वर की व्यवस्था, यानि उसके नियमों की पुस्तक

है, और इस पुस्तक में हम यह पढ़ते हैं, कि, "जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।" (1 यूहन्ना 3:4)। परमेश्वर की व्यवस्था पर नही चलना, उसके नियमों का पालन नहीं करना ही पाप है। जब हम उसकी व्यवस्थानुसार नहीं चलते तो वही व्यवस्था हमें दोषी ठहराती है।

प्रेरित पौलुस इस सम्बन्ध में हमारा ध्यान दिलाकर, बाइबल में रोमियों नाम की पुस्तक में लिखकर इस प्रकार कहता है: "तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता : व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर, तो मैं लालच को न जानता। परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है। मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परंतु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया और मैं मर गया। और वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी, मेरे लिये मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। तो क्या वह जो अच्छी थी मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि उसका पाप होना प्रकट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परंतु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूं। और जो मैं करता हूं, उसको नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूं, वह नहीं किया करता, परंतु जिससे मुझे घृणा आती है, वही करता हूं। और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूं, तो मैं मान लेता हूं, कि व्यवस्था भली है। तो ऐसी दशा में उसका करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो मुझ में बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में

अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु बास नहीं करती। इच्छा तो मुझ में है, परंतु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परंतु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं। परंतु यदि मैं वही करता हूं, जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परंतु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूं। परंतु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बंधन में डालती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियों 7:7-24)।

लेकिन फिर वही इसके आगे लिखकर यूं कहता है, कि, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं : क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दंड की आज्ञा दी।"

सो इन बातों से हम यह सीखते हैं, कि पृथ्वी पर सभी मनुष्य पापी हैं। सब पाप के वश में हैं। और पाप का कारण है व्यवस्था का उल्लंघन। व्यवस्था, अर्थात् परमेश्वर की आज्ञाओं में कोई बुराई नहीं है, बुराई स्वयं मनुष्य में है, क्योंकि मनुष्य व्यवस्था का उल्लंघन करता है। वह परमेश्वर की आत्मिक व्यवस्था पर न चलकर अपने शरीर की व्यवस्था पर चलता है। इसीलिये हमने

पढ़ा था बाइबल से, कि प्रेरित पौलुस कहता है कि मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! और मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? लेकिन फिर वह खुद ही हमें खुशी का यह पैग़ाम देता है, कि परमेश्वर ने हमें पाप और मृत्यु से छुटकारा दिलाने के लिये अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के लिये बलिदान होने को भेजकर उसके शरीर में पाप पर दंड की आज्ञा दी। परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया था ताकि उसके द्वारा या उसकी मौत के सबब से हम अपने पापों का दंड न पाएं। इसी को कहते हैं परमेश्वर का अनुग्रह!

पर क्या आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, कि वह आपके पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था? यीशु की मृत्यु के कारण, आप पाप के दंड से मुक्त हो सकते हैं। परमेश्वर चाहता है, कि आप उसमें विश्वास लाएं और उसकी आज्ञाओं पर चलें।

पाप मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या है। और यह एक ऐसी कठिन समस्या है, कि इंसान खुद कुछ भी करके इस से छुटकारा नहीं पा सकता। इस जटिल समस्या का एकमात्र हल है परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जो हम सबके पापों का छुटकारा है। यीशु क्योंकि हमारे पापों का प्रायश्चित है इसलिये उसमें विश्वास लाकर हम अपने सब पिछले पापों से मुक्त हो जाते हैं और उसमें रहकर अपने जीवन को व्यतीत करने से हम पाप करने से बचे रहते हैं। पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है। और पाप के कारण ही मनुष्य सदा परमेश्वर से अलग होकर नरक में रहेगा।

लेकिन यीशु मसीह हमारे पापों का छुटकारा है। वह हमें पाप के दंड से बचाता है, और वह हमें पाप करने से बचाता है। क्या आपने उसे अपने जीवन का उद्धारकर्ता बना लिया है?

पाप का विशाल दाम

तरक्की और उन्नति के इस ज़माने में आज इन्सान इतना अधिक व्यस्त रहता है कि उसके पास इतना भी समय नहीं है कि वह अपने सृष्टिकर्त्ता को याद कर ले। और अगर उसके पास कुछ वक्त होता भी है तो उसे वह किसी न किसी प्रकार के मनोरंजन में लगाना चाहता है। परन्तु मनुष्य को अपने जीवन के सारे परिश्रम से अन्त में क्या लाभ मिलेगा? इन्सान अपने लिये बड़े-बड़े घर बनवा सकता है, ढ़ेर सारा पैसा इकट्ठा कर सकता है। पृथ्वी पर लोगों के बीच मान-सम्मान और बड़ाई हासिल कर सकता है। लेकिन बाइबल कहती है, कि, "हर एक प्राणी घास की नाईं है, और उस की सारी शोभा घास के फूल की नाईं है: और घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है। परंतु परमेश्वर का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा।" (1 पतरस 1:24, 25)। इसलिये बाइबल में लिखा है, कि, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड, वह पिता की ओर से नहीं, परंतु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सवर्दा बना रहेगा।" (1 यूहन्ना 2:15:17)।

सो इन बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य की सारी शोभा और जो कुछ भी वह इस ज़मीन पर करता है, सब कुछ व्यर्थ है। केवल परमेश्वर का वचन, और वह इन्सान जो उसकी इच्छा पर चलता है सर्वदा बना रहेगा। इसलिये परमेश्वर के वचन का महत्व बड़ा ही विशाल है, और उसकी इच्छा को जानना मनुष्य के लिये बड़ा ही आवश्यक है, और उसकी मर्ज़ी पर चलना इन्सान के लिये बड़ा ही ज़रूरी है।

मनुष्य को परमेश्वर ने आरंभ में अपने ही समान पवित्र बनाया था। लेकिन परमेश्वर के पवित्र स्वरूप में इन्सान ज़्यादा वक्त तक नहीं रह पाया। अपनी आंखों की अभिलाषा, और शरीर की अभिलाषा और जीविका के घमंड के कारण मनुष्य ने परमेश्वर की इच्छा पर चलना छोड़ा दिया था। वह एक पापी बन गया था और परमेश्वर से उसका संबंध टूट गया था।

एक बार कुछ लोग एक पुरानी इमारत को तोड़ रहे थे। जब वे उसकी दीवार पर हथौड़े बजा रहे थे, तो उन्हें अचानक दीवार पर बना एक चित्र नज़र आया, जो दीवार पर से मिट्टी हटने के कारण दिखाई देने लगा था। उनमें से एक ने हाथ में कपड़ा लेकर उस तस्वीर पर पड़ी मिट्टी को साफ़ कर दिया। वह एक खूबसूरत तस्वीर थी। और बाद में उन्हें पता चला कि वह चित्र वास्तव में कुछ समय पहले एक बहुत ही बड़े और प्रसिद्ध चित्रकार ने बनाया था और उसकी कीमत लाखों रुपए की थी। लेकिन वह खूबसूरत कीमती तस्वीर कई वर्षों से मिट्टी के पीछे छिपी हुई थी।

परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल हमें उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में बताती है। बाइबल में लिखा है, कि यीशु इस जगत में खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने को आया था। (लूका 19:10)। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है। और इसलिये वह जानता है कि इंन्सान की ज़िंदगी कीतनी कीमती है। वह नहीं चाहता कि अपने पाप के कारण एक भी मनुष्य नाश हो। परमेश्वर की पुस्तक हमें बताती है, कि अपने प्रेम की भलाई को उसने मनुष्य पर इस प्रकार प्रकट किया है कि जब हम सब पापी ही थे तो मसीह हमारे लिये मर गया। (रोमियों 5:8)। बाइबल में लिखा है, कि मसीह यीशु का जीवन एक पवित्र जीवन था। उसने कभी भी कोई पाप नहीं किया था। वह परमेश्वर का पुत्र था। वह उसके साथ सदा से स्वर्ग में विद्यमान था। लेकिन परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया

था। वह आत्मिक एक शारीरिक बन गया। उस ने मनुष्य के रूप को धारण कर लिया। और बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि पाप से हमारा उद्धार करने के लिये और हमें नरक के दंड से छुड़ाकर स्वर्ग में अनन्त जीवन देने के लिये, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को, जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाएं। (2 कुरिन्थियों 5:21)। इसलिये बाइबल कहती है, "कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बाप-दादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी, सोने, अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ है।" (1 पतरस 1:18, 99)।

इस से भी पहिले कि परमेश्वर का वचन यीशु मसीह बनकर, स्वर्ग को छोड़कर, इस जगत में आता, परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक में लिखवाकर उसके बारे में यूं कहा था, कि, "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया, तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परंतु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया, हमारी ही शांति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया, और परमेश्वर ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और उसने अपना मुंह न खोला, जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय और भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।" (यशायाह 53:4-7)।

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल का यह सुसमाचार है, कि उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे

दिया, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)। यह सारी दुनिया के लिये परमेश्वर का संदेश है। यह पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा है। मनुष्य पाप में है, उसे पाप से उद्धार पाने की आवश्यकता है। वह पाप के कारण नरक का दंड पाने का हकदार है। इसलिये उसे अपनी दिशा को बदलता है। उसे पाप से अपना-मन फिराकर परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करके उसे मानना चाहिए। यह इंन्सान के लिये ज़मीन पर सबसे बड़ा काम है। मनुष्य एक बहुत बड़ा डॉक्टर या इंजीनियर बनकर दुनिया को छोड़कर जा सकता है; वह एक धनवान बनकर मर सकता है, वह एक ज़मीदार या विद्वान या एक कलाकार बनकर संसार से जा सकता है। किंतु यदि वह मनुष्य परमेश्वर की इच्छा को माने बिना इस जगत से चला जाएगा, तो उसे नरक के अनन्त विनाश के दंड के सिवाए और कुछ नहीं मिलेगा। और मैं चाहता हूं कि आप इस गंभीर चेतावनी के ऊपर ध्यान दें।

इसलिये चाहिए, कि हर एक इन्सान परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में अपने सारे मन से यह विश्वास लाए कि वह मेरे पापों का प्रायश्चित है। बाइबल में लिखा है, कि तुम में से हरएक अपना-अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:38)। यह परमेश्वर की आज्ञा है, यह उसकी इच्छा है। और जब तक मनुष्य उसकी इच्छा को नहीं मान लेगा वह अपने अधर्म के कामों के कारण इस जगत में और आनेवाले जगत में हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर उस से दूर रहेगा।

यीशु ने कहा था, कि मैं पाप में खोए हुए लोगों को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने को आया हूं। वह अपने वचन के द्वारा आज भी लोगों को ढूंढ रहा है, और अपने बलिदान के द्वारा वह आज भी लोगों को अपने पास उद्धार पाने के लिये बुला रहा है। उसने

इन्सान को पाप के दंड से बचाने के लिये एक बहुत बड़ा काम किया है, उसने एक बहुत बड़ा बलिदान दिया है। उसे स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आना पड़ा था। वह परमेश्वर होकर भी एक इन्सान बना था। उसने शर्म और दुख और मुसीबतों का सामना किया था। एक धर्मी और पवित्र होते हुए भी वह हमारे कारण और हमारे स्थान पर, एक अधर्मी, अपवित्र और पापी गिना गया था। और जब वह क्रूस पर सारे जगत के पापों को अपने ऊपर लेकर मर रहा था तो बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने भी उससे अपना मुंह मोड़ लिया था। और यीशु के ये शब्द आज भी बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)। क्रूस पर चढ़ा वह यीशु जगत के पापों के कारण परमेश्वर के लेखे में उस रोज़ एक अधर्मी गिना गया था। कितना बड़ा और कितना विशाल बलिदान यीशु ने हमारे लिये दे दिया। वह कंगाल बन गया ताकि हम उसमें होकर धनी बन जाएं। वह हमारे पापों के कारण पापी गिना गया ताकि हम उसमें होकर धर्मी बन जाएं।

क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? आप को चाहिए कि आप उसमें विश्वास लाकर अपने आपको उसे सौंप दें, और अपने आगे का जीवन उसकी आज्ञाओं पर चलकर व्यतीत करें। वह आपको इस जगत में एक नया जीवन देगा, और इस जीवन के बाद वह आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा।

यीशु बचाता है

आज सबसे पहिले मैं आप का ध्यान एक ऐसी कहानी के ऊपर दिलाना चाहता हूं, जिसका वर्णन हमें बाइबल में लूका नाम की पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में मिलता है। इस में हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में पढ़ते हैं, और इस कहानी में हम एक और आदमी के संबंध में भी देखते हैं जिसका नाम ज़क्कई था। हम यहां इस प्रकार देखते हैं, कि यीशु जब एक बार यरीहो नाम की जगह से निकलकर जा रहा था, तो ज़क्कई ने अपने मन में यह निश्चय किया कि वह यीशु को अवश्य देखेगा। ज़क्कई ने यीशु के बारे में बहुत सारी बातें सुन रखी थीं, और यीशु के बारे में उसके मन में बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति थी। वह यीशु का बड़ा ही आदर करत था, और उसके मन में यीशु को देखने की बड़ी ही इच्छा थी। फिर, स्वयं ज़क्कई के बारे में हम बाइबल में यूं पढ़ते हैं, कि वह एक ऐसा काम किया करता था जिसमें रिश्वत लेना और नाजायज़ तरीके से पैसा इकट्ठा करना एक बड़ी ही आम बात थी। बाइबल कहती है, कि ज़क्कई चुंगी लेनेवालों का सरदार था। उस वक्त जो लोग चुंगी लिया करते थे वे रोमी सरकार के लिये लोगों से टैक्स यानि कर वसूल किया करते थे। और अकसर ये लोग बड़े ही चरित्रहीन् हुआ करते थे। वे लोगों पर अन्याय करके उनसे नाजायज़ पैसा वसूल करते थे और कई बार घूस लेकर लोगों को छोड़ देते थे। और ज़क्कई क्योंकि चुंगी लेनेवालों का सरदार था, इसलिये लोग उसे बड़ी ही बुरी दृष्टि से देखते थे। लेकिन इस कहानी में हम यूं पढ़ते हैं, कि यीशु के बारे में सुनकर और उसके कामों के बारे में सुनकर और उसकी शिक्षाओं के बारे में सुनकर ज़क्कई के मन में कुछ परिवर्तन आ गा था, और इसलिये अब वह यीशु को देखना चाहता था। लेकिन वह कद में बहुत छोटा था। और जब यीशु वहां से होकर गुज़र रहा था तो उसके साथ लोगों की एक बहुत

बड़ी भीड़ थी और इस कारण ज़क्कई यीशु को नहीं देख सकता था। लेकिन हम पढ़ते हैं, कि यीशु को देखने की लालसा ज़क्कई के मन में इतनी प्रबल थी, कि इस से पहिले कि यीशु और वह भीड़ उसके पास से होकर गुज़रे वह एक पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठ गया, और यीशु का वहां से निकलकर जाने का इन्तिज़ार करने लगा। अब जब यीशु वहां पहुंचा तो उसने अपनी नज़र को ऊपर उठाया और ज़क्कई की तरफ देखकर उस से कहा, कि ज़क्कई नीचे उतर आ क्योंकि मैं तेरे साथ तेरे घर जाना चाहता हूं। यह सुनते ही ज़क्कई आश्चर्य-चकित और खुश होकर झट उस पेड़ पर से नीचे उतर आया और यीशु को अपने घर ले गया। किन्तु अन्य लोग यह देखकर बड़े ही चकित हुए, और उन में से कुछ कुड़कुड़ाकर यह भी कहने लगे कि यह कैसा धर्मी आदमी है जो एक पापी के घर चला गया है। लेकिन जब ज़क्कई यीशु को अपने घर में ले आया तो उसने यीशु से कहा, कि हे प्रभु अब मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को दे दूंगा और अगर किसी का भी अन्याय करके मैंने कुछ ले लिया है तो उसे मैं चौगुना वापस कर दूंगा। यीशु ने ज़क्कई के भीतर ऐसा बड़ा परिवर्तन देखकर उस से कहा, कि आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने को आया हूं।

इस कहानी में यूं तो अनेक शिक्षाप्रद बातें हमें मिलती हैं, जैसे कि हम ज़क्कई के दृढ़ निश्चय को देखते हैं। सांसारिक दृष्टिकोण से वह एक बहुत बड़ा और धनी आदमी था, पर उसने अपने जीवन में उद्धार की कमी को अनुभव किया था। वह यीशु के पास आना चाहता था। और यद्यपि यीशु को देखने में उसके सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई थी तौभी उस से वह निरुत्साहित नहीं हुआ। उसने अपनी कठिनाई का हल ढूंढा, क्योंकि वह वास्तव में यीशु को देखना चाहता था। और जब प्रभु ने उससे कहा, कि मैं आज ही तेरे घर में जाना चाहता हूं, तो उसने प्रभु की बात को टाला

नहीं, परन्तु खुशी के साथ उसने प्रभु की बात को मान लिया। फिर हम ज़क्कई के महान् पश्चात्ताप को भी देखते हैं। उसने प्रभु के सामने यह मान लिया कि वह एक पापी है, और अपनी आधी सम्पत्ति वह अब कंगालों को देना चाहता था। और जिस किसी पर अन्याय करके उस ने यदि उस से एक रुपया ले लिया था तो अब वह उसे चार रुपए लौटाने को तैयार था। यानि एक बहुत बड़ा परिवर्तन यहां हम उसके जीवन में देखते हैं।

लेकिन इन सब बातों के अलावा, एक और बड़ी ही ख़ास बात यहां हमें यह मिलती है कि यीशु ने पृथ्वी पर अपने आने के उद्देश्य को यह कहकर प्रकट किया था कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने के लिये जगत में आया हूं। वह जगत में रहने के लिये नहीं आया था। वह संसार में आदर, सम्मान और बड़ाई प्राप्त करने के लिये नहीं आया था। वह ज़मीन पर किसी "धर्म" की स्थापना करने को नहीं आया था। वह पृथ्वी पर बीमारों को चंगा करने को और भूखों को खाना खिलाने के लिये नहीं आया था। पर हकीकत में वह पाप में खोए हुए लोगों को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने को आया था। यह ज़मीन पर आने का उसका एक विशेष उद्देश्य था।

संसार में पाप से अधिक भयानक वस्तु और कोई नहीं है। पाप में एक ऐसा आकृषण है कि मनुष्य उसे देखकर अपना संतुलन खो बैठता है और उसकी ओर खिंचा चला आता है। पाप की शक्ति इतनी बड़ी है कि एक बार जब इन्सान उसके प्रभाव में आ जाता है तो फिर उस में से निकल नहीं पाता बल्कि उसका गुलाम बन जाता है। और पाप का परिणाम ऐसा भयानक है, कि वह परमेश्वर की समानता पर बने मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है। लेकिन सबसे अधिक भयानक पाप का दंड है, जिसके कारण इन्सान अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर से अलग और दूर होकर नरक में अनन्तकाल के विनाश को दंड पाएगा।

पाप एक ऐसा अन्धकार है, जिसके भीतर मनुष्य ऐसा खोया हुआ है, कि वह सच्ची और आत्मिक और परमेश्वर की जीवनदायक अनन्त बातों को देख ही नहीं सकता। पाप एक ऐसा अंधा कुआं है जिसके भीतर रहते हुए मनुष्य ऊपर की स्वर्गीय बातों को नहीं देख सकता। यही कारण है, कि आज पृथ्वी पर अधिकांश लोग केवल अपने शरीर के लिये ही बो रहे हैं। वे अपना जीवन केवल शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करने में ही व्यतीत कर रहे हैं। उन्हें अपनी आत्मा की कोई चिन्ता नहीं है। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि अनन्तकाल में वे किस जगह रहेंगे। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि "दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।" (यूहन्ना 3:19-20)। और यह सच है। आज बहुतेरे लोग यीशु के पास केवल इसीलिये नहीं आना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि यीशु के पास आने का अर्थ है बुरे कामों को छोड़ना और पाप और बुराई और गन्दी बातों से मन फिराना। और वे ऐसा करने को तैयार नहीं हैं। लेकिन वे इस बात पर ध्यान नहीं देते कि वह चीज़ जिसे बदले में यीशु उन्हें देगा वह कितनी विशाल और कितनी मूल्यवान है!

आज हमें ज़क्कई के जीवन से इस बात को सीखने की बहुत बड़ी आवश्यकता है कि हमें अपने जीवन में यीशु की ज़रूरत है। क्योंकि हम सब के सब पाप के वश में हैं। और केवल यीशु ही हमें बचा सकता है। न केवल इसलिये कि उस ने क्रूस के ऊपर अपना बलिदान देकर हम सब के पापों का प्रायश्चित किया था। लेकिन इसलिये भी कि उसने, और केवल उसी ने, पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में होकर भी एक ऐसा जीवन व्यतीत किया था जिसमें एक भी पाप

नहीं था। और अगर हम परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बलिदान को याद रखकर उसके ऊपर विश्वास रखें और उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके जीवन का अनुसरण करें, तो यीशु न केवल हमें पाप के अंधकारमय जीवन से और पाप की सामर्थ से ही बचाएगा, परंतु वह हमें पाप के परिणाम से और पाप के दंड से भी बचाएगा। क्योंकि हमारा दंड वह पहिले ही स्वयं अपने ऊपर ले चुका है, जब वह परमेश्वर की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था।

सो क्या आज आप प्रभु यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाने को तैयार हैं? यीशु चाहता है, कि आप ज़क्कई की तरह अपने जीवन से हर एक उस बात को निकाल दें जो बुरी और अनुचित और परमेश्वर के पवित्र स्वभाव के विरुद्ध है। और वह चाहता है, कि आप उसकी आज्ञा को मानकर अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, और फिर पृथ्वी पर अपना जीवन उसकी इच्छानुसार बिताएं। यीशु न केवल हमें इस जीवन में पाप से ही बचाता है, परंतु न्याय के दिन वह हमें नरक में जाने से भी बचाएगा। लेकिन शर्त यह है कि हम अपने सारे दिल से उसमें ईमान लाएं और उसकी बातों को मानें। केवल यीशु में विश्वास लाने से किसी का उद्धार नहीं होगा। सिर्फ़ पानी में बपतिस्मा लेने से किसी को मुक्ति नहीं मिल जाएगी। जबकि यीशु में विश्वास लाकर पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना ज़रूरी है। लेकिन उद्धार अंत में केवल उन्हीं लोगों का होगा जो लोग अपने जीवन के अंत तक प्रभु की आज्ञाओं पर चलकर उसके प्रति सब बातों में विश्वासी बने रहेंगे। (प्रकाशितवाक्य 2:10)। यीशु बचाता है, और बचाएगा, पर केवल उन्हें जो न केवल उसे प्रभु-प्रभु ही करते हैं, पर उसकी बातों को भी मानते हैं और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं।

यीशु कब बचाता है?

जब हम प्रभु यीशु मसीह के ऊपर विचार करते हैं तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है कि वह जगत का उद्धारकर्त्ता है। क्योंकि वह इसीलिये पृथ्वी पर आया था कि सारा जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। वह मनुष्य को कोई मार्ग दिखाने के लिये नहीं आया था, क्योंकि वह स्वयं ही मार्ग था। उसने कहा था, कि मैं पाप में खोए हुए लोगों को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने को आया हूं। (लूका 19:10)। उसने अपने समय के उन लोगों को पीतल के उस सांप की याद दिलाई थी जिसे मूसा ने एक खम्भे पर लटकाया था। उस घटना का वर्णन हमें बाइबल के पुराने नियम में इन शब्दों में मिलता है कि जब परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा किए देश में जाने की आज्ञा दी थी तो मार्ग की कठिनाईयों के कारण उनका मन कच्चा हो गया था, और वे परमेश्वर के विरोध में बोलने लगे थे। सो परमेश्वर ने उनके बीच में तेज़ विषवाले सांप भेजे थे, जो उन को डसने लगे थे, और उनमें से कितनों की मृत्यु भी हो गई थी। लेकिन फिर उन्होंने अपनी गलती को अनुभव किया था, और मूसा से कहा था, कि हम ने परमेश्वर के विरुद्ध बोलकर पाप किया है, और उन्होंने उससे निवेदन किया था कि परमेश्वर से प्रार्थना कर कि वह सांपों से हमें बचाए। सो जब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की थी, तो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा देकर कहा था, कि तू एक तेज़ विषवाले सांप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका दे तब जो भी सांप का डसा हुआ उस सांप की तरफ़ देखेगा वह बच जाएगा। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञानुसार पीतल का एक सांप बनवाकर खम्भे पर लटकाया था और तब सांपों से डसे हुए जिन-जिन लोगों ने उस सांप की ओर देखा था वे सब बच गए थे (गिनती 21)। चौदह सौ वर्ष पुरानी इस घटना को याद दिलाकर यीशु ने उन लोगों से कहा था, कि "जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया था, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए। ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने

अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परंतु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:14-16)।

सो हम बड़ी सफ़ाई से इस बात को देखते हैं कि यीशु इस जगत में लोगों को बचाने के लिये आया था। वह पीतल के उस सांप की तरह ऊंचे पर चढ़ाया गया था। उसे परमेश्वर के ज्ञान से मनुष्यों ने अपनी ईर्ष्या के कारण क्रूस पर चढ़ाया था। वे लोग जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था अपनी समझ में तो अपने एक विरोधी को नाश कर रहे थे। लेकिन वास्तव में वे परमेश्वर की एक बहुत बड़ी योजना को सफ़ल बना रहे थे। परमेश्वर ने इस बात को होने दिया था कि यीशु क्रूस पर चढ़ाया जाए और मारा जाए। क्योंकि उसकी मौत को परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया था। बाइबल कहती है, कि यीशु ने परमेश्वर के अनुग्रह से पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा था। (इब्रानियों 2:9)। और परमेश्वर ने क्रूस पर उस की मृत्यु को संसार में हर एक इंन्सान के पापों के लिये एक प्रायश्चित ठहराया था। (1 यूहन्ना 2:2; 4:10)।

लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि हर एक इन्सान यीशु की मृत्यु के कारण बच जाएगा? क्या यीशु के सलीब पर मरने के कारण हर एक इन्सान स्वर्ग में परमेश्वर के पास चला जाएगा? या, क्या यीशु की मृत्यु के द्वारा सब का पाप से उद्धार हो जाएगा? बाइबल हमें ऐसा बिल्कुल नहीं सिखाती। तो फिर यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारा उद्धार कब होता है? यीशु हमें कब बचाता है?

बाइबल में एक जगह यीशु के बारे में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और इस तरह से सिद्ध बनकर वह, "अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया।" (इब्रानियों 5:8,9)। सो यदि हम यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार पाना चाहते हैं, अगर हम चाहते हैं कि यीशु हमें पाप से बचाकर स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी दे दे, अगर हम यीशु की मृत्यु के द्वारा पाप से उद्धार पाकर नरक में जाने से बचना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम यीशु की आज्ञा को मानें

और जो वह चाहता है वही करें। बाइबल हमें ऐसा बिल्कुल नहीं सिखाती जैसा कि आज बहुत से लोगों का विचार है, कि अगर कोई यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता मान लेगा तो उसका उद्धार हो जाएगा। यद्यपि बाइबल हमें यह सिखाती है, कि उद्धार पाने के लिये या अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये, यीशु में विश्वास लाना सबसे बड़ी और सबसे पहली आवश्यकता है। बाइबल कहती है, कि विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है, यानि असम्भव है। (इब्रानियों 11:6)। लेकिन फिर भी, बाइबल कहती है कि यदि हम केवल विश्वास ही करते हैं और प्रभु की आज्ञा नहीं मानते तो हमारा विश्वास उसी तरह से मरा हुआ है जैसे की देह आत्मा के बिना मर जाती है। (याकूब 2:26)। बाइबल में याकूब 2:19 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि यदि तुम विश्वास करते हो तो अच्छा करते हो, पर दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं और थरथराते हैं। यानि जैसे मनुष्य परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु में विश्वास करते हैं वैसे ही दुष्टात्मा अर्थात् शैतान भी उसमें विश्वास रखते हैं और उससे डरते और कांपते हैं। उन्हें मालुम है कि परमेश्वर पवित्र और सर्वशक्तिमान है और यीशु उसका पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। पर वे उसकी आज्ञा को नहीं मानते। उसके कहने पर नहीं चलते, और यही कारण है कि वे दुष्टात्माएं हैं। सो यदि हम प्रभु में मानसिक रूप से केवल विश्वास ही रखते हैं, तो फिर हमारे और दुष्टात्माओं के विश्वास में क्या फ़र्क हुआ?

विश्वास बाइबल की एक बड़ी ही महान शिक्षा है। यीशु मसीह में यह विश्वास लाए बिना, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और वह परमेश्वर के अनुग्रह से हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मर गया था, कोई भी प्राणी उद्धार नहीं पा सकता। लेकिन अगर हमारा विश्वास केवल मानसिक है, यानि सिर्फ़ हम अपने मन में ऐसा विश्वास रखते हैं और जिन आज्ञाओं को प्रभु यीशु ने हमें दिया है उन्हें नहीं मानते हैं तो ऐसा विश्वास केवल एक विश्वास है। वह एक मरा हुआ विश्वास है। सुनिए कि प्रभु यीशु ने

स्वयं क्या कहा था, प्रभु ने कहा था कि, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?" (लूका 6:46)। क्या कोई भाषा इससे भी अधिक स्पष्ट हो सकती है? यीशु कहता है, कि जब तुम मेरा कहना ही नहीं मानते हो, या जो बात मैं तुम्हें कहता हूं उसे नहीं करते हो, तो फिर मेरा नाम क्यों लेते हो? मुझे अपना उद्धारकर्त्ता क्यों मानते हो? मेरे नाम से प्रार्थना क्यों करते हो? मेरे नाम का प्रचार क्यों करते हो? और अपने आप को मेरा अनुयायी क्यों कहते हो?

मेरे मित्रो, मेरे अज़ीज़ो आज मैं आप को एक बड़ी ही गंभीर बात बता रहा हूँ। आपका विश्वास चाहे कितना भी लम्बा और चौड़ा और गहरा क्यों न हो, परन्तु यदि आप प्रभु यीशु मसीह की सरल और साधारण सी आज्ञाओं को नहीं मानते, और जो वह कहता है उस काम को नहीं करते, तो आपका विश्वास व्यर्थ है, वह एक मरा हुआ ईमान है, जिससे किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता।

मैं ऐसे बहुतेरे लोगों से मिल चुका हूं, जो कहते हैं कि हमने प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता मान लिया है, लेकिन उन्होंने यीशु की आज्ञा को मानकर बपतिस्मा नहीं लिया है। क्योंकि उनके विचार में उद्धार पाने के लिये विश्वास लाना तो आवश्यक है पर बपतिस्मा लेना ज़रूरी नहीं है। तौभी बाइबल में मरकुस की पुस्तक के सोलह अध्याय में हम पढ़ते हैं, कि यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर भेजा था कि तुम सारे जगत में जाकर सब लोगों को मेरा सुसमाचार सुनाओ और जो सुनकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:15, 16)।

सो यीशु की मृत्यु के द्वारा हमारा उद्धार तब होता है जब हम उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और वैसा ही जीवन व्यतीत करते हैं जैसा कि वह हमसे चाहता है।

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "तुम न तो संसार से और न संसार में कि वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कछ संसार में है, अर्थात्

शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा, और जीविका का घमन्ड, वह पिता कि ओर से नहीं, परंतु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।" (1 यूहन्ना 2:15-17)। परमेश्वर में विश्वास रखना अच्छा और ज़रूरी है। लेकिन उसमें केवल विश्वास ही रखना पर्याप्त नहीं हैं। यदि हम अपने पापों से उद्धार पाकर उसके स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम उसकी आज्ञाओं को भी मानें और उसकी इच्छा पर चलें, यानि जो वह कहता है उसे करें।

आत्मिक या धार्मिक दृष्टिकोण से आज संसार में क्यों इतनी बड़ी फूट और गड़बड़ी दिखाई देती है? जबकि बाइबल में, 1 कुरिन्थियों 14:33 में, लिखा है कि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परंतु शान्ति का परमेश्वर है। बाइबल कहती है कि केवल एक ही कलीसिया है (मत्ती 16:18; इफिसियों 4:4)। जबकि आज संसार में लोगों ने सैकड़ों कलीसियाएं बना ली हैं। बाइबल के अनुसार, केवल एक ही विश्वास है (इफिसियों 4:5; रोमियों 10:17), पर लोगों के आज तरह-तरह के विश्वास हैं। क्यों? क्योंकि आज अधिकांश लोग परमेश्वर की बाइबल में लिखी बातों पर न चलकर मनुष्यों की बातों पर चल रहे हैं। पादरियों, बिशपों और पोप जैसे नाशमान मनुष्यों की बातों को लोग आज परमेश्वर का वचन समझकर मान रहे हैं। प्रभु यीशु ने कहा था कि ऐसे लोग मेरी उपासना व्यर्थ में कर रहे हैं (मत्ती 15:8,9)। और न्याय के दिन वह ऐसे लोगों से साफ़ शब्दों में यह कह देगा, कि मैं तुम को नहीं जानता हे कुकर्म करनेवालो मेरे सामने से दूर हो जाओ। (मत्ती 7:21-23)। लेकिन इससे पहले कि न्याय का वह भयानक दिन अचानक आ जाए, आज हमारे पास यह सुंदर अवसर है कि हम सब बुराईयों से और मनुष्यों की शिक्षाओं से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस आ जाएं।